



प्रद्युम्नकुमार चरित्र

॥ अथ मंगलो-वरण एति ॥

उसे द्वारम् वाचन के प्रहृष्टे निरपेक्ष बना दाते ॥

आकार के सुख नियम्य वर्णने योगिनः ।

वृषभं मोहदं वेव ग्राम्याय नमो नमः ॥१४॥

महा

अविरच द्वावद्वानोध पृष्ठादिल संकृतं मूलं कृतं का ।

मुनिमित्रपासिल लियो सरस्वती हरतु को दुर्वितान् ॥१५॥

अशान लिमित्रान्वानोदाना ज्ञन द्वाकाक्षया ।

चक्रुक्तं न्योगितं येन लास्मै नीतु गुरुवेनमः ॥१६॥

पृथम गुरुवेनमः परम्परान्वाय गुरुवेनमः (संकृतं कृतु) वेदव्यासकं नीयसां यादिवर्षकं धर्म

सत्वन्वकं मव्यजीव प्रतिष्ठोषकं रक्षकं मिदं यत्त्वा रामं नीत्रिप्रद्युम्नवारिभनामव्यायं अस्य मूलं शाय

कृतारः नीतिसंवर्कादवाः लकुन्नार वातारः नीतिगोपवरदेवः लघुं वन्वानुसारं प्रसादं नीतिरोम

विलीन्योगिणां लद्व वन्वना नुसार द्वितीयं उत्तरादि सरागर विराचेतं श्रीतारः सरावद्यान

तयारं शुद्धं वातु ।

सुगतं भवान् वीरो मंगलं गोलमो गती ।

मंगलं कुन्तु कुन्दायो जीव व्यामीरतु मंगलं ॥

अस्त्राय द्वयोः

स्त्रीमतीं सम्मतीं गत्वा नोमिनाथं जिवेष्वरं ।

मदनो रवेश्च जेता पीवा वायो लुं नो दूर्दाक्षय ॥४॥

वृथा मानं जिवेन्न बृथा वृथा मानं साता मिव ॥

यक्षुष्व हर्षी नाज्ञालः सहस्रं नायनो हर्षीः ॥५॥

प्रभाव भूती द्वीजो जिवेद्व वृथा नो हृलाम् ॥

वरीभ कुष्णा पुभस्य वृह्ये चुमातु सातः ॥६॥

अनां वरुष्य कृप अलं रंग इद्धमी वसमव हरणा हि कृप वा हृष्टद्धमी संयुक्ती

महावीर स्वामी वृभी नोमिनाथं स्वामीना ज्याना की जिवेन्न विजार कामदेव ही

को ही व्याहार पुष्पवृ दृश्यत्वा नाही, नमस्कार कृष्ण लद्य सल्पुष्पाशाच्या पुष्परात्रेऽवृत्त-

विवार, ज्यात्यहर्त्तन मामे साधनं स्वर्गीये इद्वाच्छ्रुजार नभवत्परम्पर अर्थात्

वृध्मीन जिनाम् नमस्कार कृष्ण, उपाये जिवेद्व तुरकातुन् प्रसवानारी सरसवानी-

विवार नमस्कार गुरुनामी पुष्पस्वाच्याच्याकृद्य नानु सार श्रीकृष्ण नारायण चंद्रमा

पुभस्तुतं कृमार (कृपदेव) वरीभ वर्त्तेऽव ॥

प्रसादवत्, दंतुक्षेप, अप्यक्षम्,

वास्तु वास्तु, वास्तु वास्तु

वरीभ, वेष्टनं वास्तु वास्तु

दो वास्तु वास्तु वास्तु वास्तु, वास्तु वास्तु

वास्तु वास्तु वास्तु वास्तु, वास्तु वास्तु वास्तु

वास्तु वास्तु वास्तु वास्तु, वास्तु वास्तु वास्तु

ਮਾਨ ਪੜਾ ਅਤੇ ਦਾਰਿਦਰੀ ਲਈ ਸਾਡੇ ਮਾਹੌਲ ਵਾਲੀ ਦੁਪਦੇਵ ਅਧਿਕ ਵਾਹਿਗੁਣਾਂ
ਵਿੱਚ ਵੇਂ ਅਤੇ ਪ੍ਰਵਿੱਤੀ ਵਿੱਚ ਸਾਡੇ ਮਾਹੌਲ ਵਾਲੀ ਅਤੇ ਪ੍ਰਵਿੱਤੀ ਵਿੱਚ ! ਪ੍ਰਵਿੱਤੀ ਵਾਲੀ
ਵਿੱਚ ਵੇਂ ਅਤੇ ਪ੍ਰਵਿੱਤੀ ਵਿੱਚ ਸਾਡੇ ਮਾਹੌਲ ਵਾਲੀ ਅਤੇ ਪ੍ਰਵਿੱਤੀ ਵਿੱਚ ! ਪ੍ਰਵਿੱਤੀ ਵਾਲੀ
ਵਿੱਚ ਵੇਂ ਅਤੇ ਪ੍ਰਵਿੱਤੀ ਵਿੱਚ ਸਾਡੇ ਮਾਹੌਲ ਵਾਲੀ ਅਤੇ ਪ੍ਰਵਿੱਤੀ ਵਿੱਚ ! ਪ੍ਰਵਿੱਤੀ ਵਾਲੀ

मनुष्य हार्दिक सभा वामपानी तो. मी इसके छह अंतर्गत नारे की जीवन जीवन,
 केवल दुर्लभ है एवं मनात जो उसका उपयन शास्त्र आहे, यामुळे हे वापनारा-
 ष्ट पुरुषावलन वारिअ वृद्धन करते. श्रीजिनेश्वर देवाच्या पूजा उद्घाटन उत्तमात्मा
 एवं पुरुषाच्या पुरुषाच्या वृद्धन, देवाच्यी वृद्धन मानव विवरणमध्येनी पूजा क-
 रीत नाहीत! कर्मात्मक. श्रीजिन सनादी पूज्य अनांशिकी उत्तममात्रा निरूपण
 करते देवाच्य कथनांनुसार मी अंग-पृष्ठ देवाच्य वृषभार्थी सेवाच्य प्रसादाने
 वर्णन करते.

उपाचारिताच्य वाचन-प्राप्ति इति वाचना अंग स्तुति अंश स्तुति, वर्णन
 वारिअ मुख्य जिवानी श्रीवर्ण करते वाहिजे. श्रीशंद वृषभी हे वारिअ दृष्टप्राचुर्या वारा-
 ष्ट पुरुषावलक्षणी वारिअता तो. तसेच देव वारिअस मी मुख्य जिवाच्य इति वृषभी
 वारिअ, पुरुषावलक्षणी वृषभी वारिअता वारिअता वृषभी वारिअता वृषभी वृषभी
 वारिअ फारच सोषे वृषभी वृषभी अहे.

जंहुद्वीपजागे अनुपमसुंदर मरालक्ष्मेभज्या असेतयामध्ये मगद्यदत्तावसतेस ॥

पुण्यवंतयाविणभव्यदुसराउपमेतो द्वावया अभाति उपमुक्त सुरजन्मावया ॥४५॥

त्यामध्योऽजगृह नगरीसुंदर असे ॥

जिन हीरवर बहुद मंदिर वहु उच्चल दसे ॥

द्यावरी फुडुक्कली जिन्हाया जारी तु यसे ॥

उल्लेखन कर्देर करन करन द्वावरी सुरिव जनता वासती ॥ करायावर्ण नकुंठितमती ॥४५॥

नगरीलया नृप मेणिक मंडित साम्यक दर्शन गुणी गमलसे प्रभाति जगुद्दिनमणी ॥

राणितया नेत्रने आति सुंदर इश्वरी जगुरोहिणी राजती ववता इद्रौचणी ॥ ४६ ॥

नृपराणि अहनिंश्च सुखमोगी लिवहुपरी । नवदुरवजयामनि पुण्यउदय जनुसरी ॥

जिन धर्मि अहनिंश्च रघुनिरक्षया आन्धरी ॥

ग्रोगभोगता अधरी वसन्त जालरोकी ॥ कराया ॥ ४६ ॥

योके देवने विपुला वरदयवाति जिन सन्माली प्राप्तप्रे रुषुनियानवलग्नदुलहारुते ॥

प्रभाव समय रारण महुनीया उपवाने लव धूतप्रे करेतेकते पुलमोरनमते ॥ ४७ ॥

वनमार्गवाचुन द्वावलका अस्तु येती । करी मृगां तदानीजानेमार्ग याती ॥

आन्धरेता

ब्रह्मदारुता

५१०४८
॥ हे नवरत्न जिताये ता॒मने जा॒ली ॥

समवृत्ति^३ विपुल चोकि बदलो कुर्दिल होय स्वास्त्री ॥ कराया ॥ ३ ॥

पहल पुष्पादिक अमिन विवृति राजसम प्राप्ति वानू पाठ्या कुर्दिल न अभिप्राहता ॥

कर्मणा साक्षं गन्मन लद्दन न लरविनये व्युह कुर्दिल देवते मेटनु पाठ्या गुनी ॥ वाट ॥

रेजमुखे वहाकी महाराज आपुले वनी । ये समवृत्ति सन्मालि वे ~~हुक्की~~ सहबुद्धुकी

॥ त्याक्षसाद तुम्हे यृत्याक्षो भेदुवनी ॥

रुकुने वन रक्षक वचनाले कुर्दिल होय मूर्खली ॥ कराया ॥ ४ ॥

॥ निवृत्ति अगमन जिनप्रभु वे नुपरी हासन वारनी उठले से हृषीकुरु होवृनी ॥

रात्रपालुके यादी वालन पूरोक्ष अभ्याकरी वृसले रे पुन्हा आसनवरी ॥ वाट ॥ ५ ॥

देवकी अमृथा वनमात्रा अंगीन्ये । सेवका द्वाहिवा न गारे वहले से वचे ॥

जल अद्वाल रुभ वृक्ष दीपुष्प जाङ्की ॥

मुर्द्धन अल्लद्वय निज निज वाहनि वै स्त्री ॥ कराया ॥ ५ ॥

विघ्नासवाहि कुरु प्राहलं मानस्त्वं भृती वाहना वृक्ष त्वे उतरती ॥
मानसंभवाहिया सरकीरजन

जिन संनीधि साधारण मन करे वृथाते हुनी उरी। जिन भय प्रदक्षिणा देवता ॥४॥

करे लसे स्तवने मा जग तु ज्यु जिन पती। तव सुरन र वंदी ले पादक्षय मो पती ॥५॥

पापांध नारुनी हरी जगा रुमनी ॥६॥

ब्यूमाठी द्वाक्षर अधनु सम पूरक सी जग जापीती ॥७॥

सुभट पोह कामासु जिं कथा पवल द्वार तु असे स्वयं प्रभ पुरुषातम बुद्धसे ॥८॥

व्यर भूवाणी चिन चतुर्मुख चुन नो काजगीती क्षणी मृतुने तव पाय वंदा निमुवनी ॥९॥

भोदुः श्वरोक संलापव्याधि नाराण्या। भय दत्तने वे भूषित माहसरी हावण्य ॥१०॥

तथ द्वादश अलबोध उभ सनमा ॥

दत्तन तु जावे जग लिकुणी ही मृतुन वंदी तु जपती ॥११॥

कारयोग वर्णल लव माहिमा देवा ले भूषी मानसी दो द्वादश दात जिहे वारीती ॥१२॥

दृष्टि न वलो धाग गुणालव कुणाल स मोहि न पती मृतुने वंदन तव चरणाधती ॥१३॥

जग आहानांधः कारि सदा बुद्धसे। तु जवा चुन त्वार क जग तिकुणी न वर्दिसे ॥१४॥

हारक सत्प भयस्तुषुन तु मलसे
तृभयमयहार क जापु न विनवीसे ॥१५॥

उपद उमुत पाजुने सत्वर करे दहाठा सनमती ॥१६॥

अपदेजिन प्रभुलानुपत्तीन मार्गे चरोहुनी दलवेयले अनुवानी ॥५॥ नंलर जावुन
 मानव काटीत आये भूप चैसला समेला अपेल मेह जाहांडा ॥६॥ लहनंतर जिन
 वर हृष्यधर्मी धर्मी ॥ मालकावृथमी पुरनी मार्गा ॥७॥ अगुञ्जते पाच्छिन गुण
~~मार्गिकर्त्ता~~
 शुलास द्वावचा ॥ चार घोले इष्टादिक महोवर्णन कारि जिन पती ॥ कराया ॥९॥

हुसरा मेह यत्प्रिया नामे अन्नांगा ॥ उम असेलयाते डग्गुस्तु वायेतसे ॥ पांच महावत
 रामिले पांच शुषी भय उत्तर गुणा वर वेयले अनुवावेस मुल्लुणा ॥ चाठा ~~देखने~~
~~मुक्ता~~
 शुपद्मनो तुल्लुणा ॥ वहुविनय प्रभुलाप्रणालुस्तु लगावा ॥ नीकुण पुभद्वयुन
 कुमर जानेणा ॥ कौथालयावी शुद्धणा लवाया उत्तरुक भोक्य मती ॥ कराया ॥१०॥
 वहै जिनपती भूप भैणीक प्रणालुका चुनिका रोकता हषे होय धार्मिका ॥ स्थीर करा-
 नी विन मेवण करे कथा पुण्य पावनी अनुगम स्वर्गीयोहुदायेनी ॥ चाठा ॥११॥ लोवाने
 समाजन सावधान वैसली ॥ नीमुदन चरिता हुषीनीया रोकती ॥ जिन दिव्य द्वनीने
~~मातपत्रिमात्रव्यहरणी~~
 सर्व सम सांगती ॥ मवभय हारक पुण्य प्रदायक न-पृष्ठा ॥१२॥ कराया ॥१२॥ ५-

जालुकी यमनो हुर जगती तथा मरलदृष्टिणी गोपेजागु मुद्रिकात हुरकी ॥ तथा माजेरो राष्ट्र
 हैरा है स्वर्गीरमगमतरे तुरवाणी विमान विलसल असे ॥ चाठा ॥ हैरे त्रिक्षुरकानग-
~~मातपत्रिमात्रव्यहरणी~~

दी अनुपम अर्जे ॥ जग्नुस्वर्गलोके दी अनुपम रोगमत्ते ॥ गौवे सात् वाहाधीकर्य-
प्री इति भृगस्य ॥ वचनी हुनि रमणीय अस्ति दायुष्माया नव वहीती ॥ कुराया ॥ ४२ ॥
द्विरक्षर बहुद्वजिन मंदिर उन्नत वृन्द कलद दायावरी निशांगेषु उक्तसंभवजरी ॥ हाटवाट
बहु दग्धविंगी नाटक गृहधारुनी करी भृग न रजन न रक्षामिनी ॥ वाट प्रकृत वार्ड धरो
घरि उगोमिवं लहुपरी ॥ बहु पुष्प सुग्राधीत वधनो नानायरी ॥ करि ग्रन्थमर स्वरम्य
रस गुजार वरदी ॥ इत्युक्तु जले परि पुर्ण वाटिका गवाली दाया नव कीरी ॥ कुराया ॥ ४३ ॥
काट दवालीका अनुपम सुदरुष्ठा जलें मारे यती उस्तुति दुर्गमिव्याघ्रकी ॥ सरोकरे बहु
रमणी असती कमल चयाभीलवी प्रकृतित भ्रमर रमेत्यावरी ॥ वाट ॥ उपवन मनोहर
उगोमिवं लहुपरी ॥ वाटके ल इक्षुमधुर अमृतायरी ॥ नारकी जायक ल संभेदंग
के सरी ॥ वदाम देवस्ता वैकिञ्चिमकी आश्रामी नव मिती ॥ कुराया ॥ ४४ ॥
वरजाते विलक्षण प्रूपती अर्थ विक्रियावरी नव गव अलरी हया ॥ जगीतलूकम
नव दाता भ्रोका इतना भूषण लुणी जिनाची भ्राती करी निरादनी ॥ वाट ॥ ज्याहामु
दायद्यधागि कंसादेव मद्देते ॥ गिरी गोवधन लघु अंगुलि वर उवलेते ॥ गोवत्सनि-
विड वानि न लुणेया वारिते ॥ बिरुद कर ली नाग द्वार वधनु इत्यादि क प्राप्ती लकड़ाया ॥ ४५

जरारेत्वम् भूत्वा महोदयारापां भवीयते किंतु त्रिशति रात्रि एव द्वादश वर्षात्
न समुद्भवतु न द्वारा वाले वसाविनी भवते अनन्तं क्रोट इति उच्चारते ॥ १८५ ॥ तो अनन्त
बध्यते पायमस्मात् रो ॥ जेऽपारणयोते हयो ये रक्षणावलसे ॥ गद्य द्वय द्वय द्वय
गणास्त्रियवत्से ॥ यद्यवकुलदेवता न रक्षणाकुल द्वय समरूपन देवी ॥ कराया ॥ १८६ ॥
मात्रभागीणसमयरात्रे जग्नुनस्वद्वद्वत्तां वरी सद्गुणा विकार अद्वीती ॥ रात्रि सम्भव
मात्रात्तिसुद्दरसोऽवती शकुणी पुण्यवाले हरी वेत्ताकष्टी ॥ वात ॥ ज्यासहस्रादा-
उद्देश्यमाजिपद्मी ॥ महनासदत्पीवा नमंतज्ञावो हृणी ॥ उच्चारय अनुपमा उच्चार-
त द्वयमलद्वयी ॥ एवर्ग अंगनाहुनि अतिसुद्दरउपमानवज्ञा द्वेती ॥ कराया ॥ १८७ ॥
लहरी साकुडामुणी न वरवणी कारण हयाय अरोपयोगा विनोदुनी वदलते ॥ १८८ ॥
~~तद्वयमेष्वं विवरत्वा तद्वयमेष्वं विवरत्वा~~ ~~तद्वयमेष्वं विवरत्वा~~
न वद्वयमेष्वं विवरत्वा तद्वयमेष्वं विवरत्वा जारिणी सम्भवजाको विवरत्वा ॥ १८९ ॥ वहुविन-
य गुणादेव धारक जी समाप्ती ॥ जन्मुमरागात्मासम्भवतु द्वयमेष्वं विवरत्वा ॥ परते
आशोवेण नवमावरणे वेदुत्तमवती ॥ द्वयकुल मृषणानेत्रकलक जी पाते
मनरंजनसती ॥ कराया ॥ १९० ॥

वाहु वदा ने हृष्ण महाराजी से समाज जन्मा-कोंदा की ॥
वरणी मधुर सम-वदा इमिजामु-सत्त्व कुम्भ मवारो मवास-टेका दुनकरायरी ॥ वाहु ॥
जापु चुंचराधवाटमनारा ॥ ही दृवदाके को लेकुंदु बुधपदी सत्त्व ॥ वाहु
अधर दर्शी आरक्ष घोष कुलजी ॥ श्रेवार्दृश्व सामन्द्रय-कुमासम उन्नत त्रिरेता-
भी ॥ कराय ॥ १५१ ॥ जनधामवलहृय ही अहोनीरा रोरयमोगे बुधपरीजयो-वे
कुः रवनामवहृउरी ॥ योद्देवी वाहुरामसमि पहरि समेमाजी लोसली ॥ येहामी रुमन-
वला पूर्वामी ॥ १५२ ॥ योता कुड़ा ॥ तुन लेजः पुंजी ग्रामसा ॥ याहुलासमाजन विवार करिती
असा हृअगमी अथवा देनकर समाजसा ॥ कुली वहृते हृउत्त-कानतरी रुमादिक सा-
गरी ॥ कराय ॥ १५३ ॥ यापरि व्यवलां कुलहृनंता महानि वहृउत्तरता लेहृयेवदा सर्वपा-
हुला ॥ जटाधारि नेसोने दंगोटी कुड़ा सना धक्की व्यालती गननारद सत्यरी ॥ १५४ ॥
को तुक आमेका हमीकरह पोयणो सदा ॥ जिन धर्म द्वै विवेष अथवा स्मर्ति नववृ ॥ १५५ ॥
मानि हास्य असारा हारी सरदी ॥ लिय वंदन करी व्युत्ती त्रिलोकी प्रसादी करा-
कृ ॥ १५६ ॥ कुण्डा सही वलहृते मारी दुक्कजन मुहादी भूता छन नेया नमन करी सरवा ॥ १५७ ॥
॥ जटान सन्मुख वहृत्ये सत्त्वरन मुसकार कुरी वले दुक्कन वरणाम अथ दृवसे ॥ वाहु ॥

੨੧ ਵਹਿਰੇ ਲਿਆਈ ਅਤੀਮੀਏ ਸ਼ਬਦੀ ੫

ਕਲਾਨੀ ਲਿਆਕਾ ਕੇਨੋ ਕਾ ਸ਼ਾਸ਼ਨੀ ॥ ਅਥਰਵਪ੍ਰੇ ਸ਼ਲਖਨ ਕਾਰੀ ਲਾਭੁਨੀ ॥ ਲਵਾਗ-
ਮੇਨੇ ਸਮਾਂ ਘੁਹੁ ਦੁਖੇ ਮਾਨੁਨੀ ॥ ਸਮਾਂ ਸੁ ਆਧ ਰੂਪੁ ਨੀ ਲਵ ਹੁਣਿ ॥ ਜਾਇ ਸਨਮਾਂ ॥ ਕਰਾਧੁ ॥
॥੨੨॥ ਕਰਾਨੇ ਰਾਖਨ ਪਾਛੁ ਕੁਸਾਂ ਕਾ ਸੁਨੀ ॥ ਸੈਂਹੋ ਸਨੀ ਪੁਰਲੇ ਦੀ ਸ਼ਕੁਤ੍ਰਾਂ ਚੁਪੁਗੁਣੀ ॥

ਨਾਰਦੁ ਲੁਭਾ ਹਾਰਦੁ ਨਿਵੋਲੇ ਮੇਟਨੁ ਹੀਦੁ ਵਿਵਚਾ ਸਨੀ ਯਕੁ ਰਾਵਲੇ ਬਾਵ ਮਾਂ ॥ ੨੨੬ ॥ ਸੀਓ-
ਨੇਂ ਕੁ ਹਰਿਹਰਨ ਗੋਚਰਮਾ ਮੇਟਣੀ ॥ ਪੇਰਲੇ ਸੁ ਚੁਲ੍ਹੇ ਦ੍ਰਿੜੁ ਅਨ੍ਯ ਨਾਲੁ ਕਾਰਣੀ ॥ ਸ੍ਰਵਨ ਸਾਫਤ ਚੀ
ਖਾਵ ਤੇ ਸਾਨੇ ॥ ਘੁਪਰੇ ਨੇ ਜਾਨੇ ਜਵਾਤੀ ਹੁਣੁ ਨੇ ਹਰਿਨਾਰਦੁ ਪਾਲਤੀ ॥ ਕਰਾਧੁ ॥ ੨੩੫

ਤਲ ਸਮ੍ਰਾਂ ਸੀਨੇ ਸੇ ਨਾਥ ਜੇਨ ਸਮੇ ਮਾਡੇ ਪੁਲੇ ਘਾਹਨੀ ਸਵਤੁ ਮੇਟਾਉ ॥ ਨੇ ਜਾਂ ਸੇਂਹਾ-
ਸਾਨੇ ਤੇ ਨਾਸ ਕਾ ਸਵੁਨ ਮਾਨੀ ਸਾਲ ਵਾਖੁਨੀ ਕਹੂਣੀ ਸਤਵਨ ਆਖਿ ਰੈਖੁਨੀ ॥ ਸਿਵਾਂ ਪਤਵੁ ਨ ਤਰੁ

ਨਾਰਦੁ ਹਰੇ ਸਵਦੇ ਲਾਭੁਨੀ ॥ ਸਮ ਮੁਸਾ ਨੇ ਰਲੁ ਆਡੀ ਦੁਲਾਲਾ ਗੁਨੀ ॥ ਰਲ ਸਵਿ ਕਾਕ
ਮੀ ਸਿਦ੍ਧੁ ਕੋ ਮੇਦਣੀ ॥ ਤੁਮ੍ਹਾ ਪਾਹਲਾ ਹੁਣੀ ਨੇ ਰਲੁ ਹੋਤ ਅਗੇ ਮਾਝ ਪ੍ਰਤੀ ਕਰਾਧੁ ॥ ੨੪੫

ਨਾਰਦ ਰਣਵਾਲ ਸਮੇਂ ਲਾਵਲ ਵਿਵਚਾ ਕਾਰਣ ਹੁਣੁ ਸਾਹੇਨੀ ਅਚਕਾ ਨ ਵਤ੍ਪੁ ਮਾਂ ਅਮੁਵਨੀ ॥ ਘੁਪਰੇ
ਲਾਭੁਨੀ - ਨਾਰਦੁ ਅਲਾਇ ਦੀ ਹੋਖੁਨ ਲਵੇ ਜਾਲੇ ਸੰਭਾਲੇ ਪੂਰੀ ਭੇਦੇ ॥ ਸਿਵਾਂ ਨ ਜਵਾਵੇ ਵਾਰ
ਕਾਰਨੀ ਜਾਧੀ ਮਾਮਾ ਬਹੀ ॥ ਲਲ ਸਮ੍ਰਾਂ ਮਾਮਾ ਵਕਾ ਮੂ਷ਣ ਕਰੀ ਪ ਨਕੁ ਨੇ ਘ ਬਲ ਲੇ ਕੁ-

અભિનાવથી પદ્ધતિને જરૂર બદલ્યું ગયું અસેવી સત્તી રક્તાચાર્ય પદ્ધતિ
યાપરિ બદલતાની લેખણો હલ્દું વિનાય માગુની રાહેણો રમાન પચ્છામણી મણ
વેમુષિલ જટાધારી ને જસુખ્યા સમિપ પાહુલ દ્વારાની પાલો બેચાલ બદલો || ચાંપાની ને જ
રૂપાસામિટ જવે હેરૂનું બદલા હરળી || કારે લેરસકારુને જ હલ્દું પદાસ ધારુની || હલ્દું વાહુલો
નારદ કાઢુની મની || કારને ને આસ્ક વર્ષી મુખ્ય ઘરથી કાપીલ ગૃહીતી || કરાયા || ૨૭૫
લેખણ જાય સન્માની ને વાતર કાળી કાઢું જાહેર નાદી એક મર્હુમી વાતર || એક આહુદી
રીસ લેયને અયમાનુને કુરવાને ન પુરુણી માયેલ વિનાય જાળીએ || ચાંપાની લવ વેચારું એ
તારે નારદ કારે કાઢું પરી || પુરે કાય કરાવ સુચે ન જાય જાંબળી || મણી વેપારિ તારે બેચુન
માતા ધરી || ~~સૌદી વન્દી~~ ~~મણી~~ ~~દાંશી જાંબળી~~ ~~અણી~~ અણારે ચાંપારે મુલું હાતસે સત્તી રક્તાચાર્ય || ૨૭૫
રૂપાસામણ સાધરુની બદલતા ગેરી || રૂપાસાચરી દ્વારાની વિમાને બસતાં વરી || રદ્ધું
જીથે વર બ્લાસ્ટ મણાલર વેચારુની કરાગાળો ન હાલસે કાઢી સુચેનાયતા || વાંદી જામાદી
વુરોના લપુસાની ચામાંની || કુણી મોઘ કરી તરી સ્ત્રી ઓધીત હોતેસે મણી અડિન દ્વિપાં
તારીને યગમાન કરિતાં || જાંબું કૃઠનાં કાઢી સુચેમણ ઉપાય હી કુરતી રક્તાચાર્ય

प्राप्ति करन्या कुः सहुङ्किः विलोक्त जब ही सतीलिपि द्वारा उत्तम मति ॥ हृषीकेश
वर्ण निकलनी करन्या करनी परं विवेत् प्रमाणित बहुधरे ॥ चाल ॥ हृषीकेश अंग
कुः विवेत् बहुधरी ॥ मज्जात्प्रसन्नां तीउपाय व्याख्यवभवी ॥ कामाय करनी रत पर तु कुडी
जरी ॥ व्यग करिष्ठ हृषीकेश ॥ कुः विवेत् लोक्त अती ॥ कराय ॥ २०५
विवाह वारितां अस्त्रात्प्रसन्नामाने इति नरवती विसो करोवे काय असेवदत्तसां ॥ राग
सीधी विवेत् अग्रही जन्मति हृषी अतरी नकारितां विमुणेत्वमरी ॥ चाल ॥ वि�-
व्यासना हृषीकेश रामेत्वमरवरी ॥ इरल सत्यनां शाष्टमार्त्रो वहुधरी ॥ हृषीकेश
निरंतर रामेत्वमरवरी ॥ शश जात्प्रस ॥ कष्ट अमितमज आग्नीहोय बहुधरी ॥
कराय ॥ २०६ ॥ उसां करनीया विवाह वसना वित्त स्वर्ण करनीया ॥ वहुधरी
रमर्त्यु रात्रया ॥ शहीवर माहेश्वरा सवली सम कुः स्वर्णदुसरे देसे हृषीकेश
उपाय वरवा असे ॥ चाल ॥ मगानी घेते धुनी नारद बहुलो धुनी ॥ विजयार्थी गीरी व-
र अमरतामुख पूरनी ॥ विद्या धरकन्या विद्या ॥ २३५ भलक्षणी ॥ नारद सेयो कर्त्तृ अनु-
यम सुंदर मामेहुन रपवती कराय ॥ ३३५ दोनही अपी विद्या विद्यानारद रवेद रवेन
जाहुला वहे माने समय कठिण प्राप्ति ॥ कुटे जावुनी बघु कन्या का सुंदर मामेहुनी

शुभातिलेजकुः श्रवेत्वद्यताहृष्टा ॥१८॥५२॥ इनेषु नियते युनो श्रमत अन्यत हिवरी

॥ शुभातानगरपुरुषाण वहुलापुरी ॥ अन्यत अन्यत लियहुन रादेसे कुलापी गोजीरी ॥ देव

द्वाकुलापुरी पुरनगरापुरी द्वाकुलापुरी ॥ कर ॥ २८ ॥ ३२ ॥ ~~कुलापुरी~~ - शुभातानगरपुरी ॥ मिल

बाधुला नारद विभाना संसद्यरी उत्तरधी आनंदुने शहिवरी ॥ नूपालि मिथुन वालवारु लेघे च-
अवालिसम शुभापुरी मिथुनीरी ॥ गोजी जयपुरी ॥ नूपालि मिथुन वालवारु लेघे चुक्कु-

र आसे ॥ बानमालडाचे च्यवी जाणुरे ॥ होणी गमलेस ॥ इनेज शुभेनुपाला अलिशाय शुभेवरी

लेस ॥ धलीडाला दांहयी विभूतिमाया विरहितसती ॥ कर ॥ २८ ॥ येके देव जेवृप

मिथुन नासह समारथा नेवेसला प्राप्त रुदिना रादुसे पाहुली ॥ तुठुन राहुली उमे सवही

नारदासपुरी शुभकरि नमकारलेषुनी ॥ चारपावसावेलेनक असनी शुल आदरे ॥

शुभानिया चरणहुयपुरजनादिवाधीकरे ॥ शुभानिया छेष्ठुकुलालादिवाधी अदरे एनेज

निजवाली आमिलहुक्की यरस्यरासंगली ॥ कर ॥ ४५ ॥ ३४५ शुभातिलाधानी कुमशानारद

नुपलीला शुभातसे अहोहुकुमशानाल्ला ॥ असे ॥ वेदनुष्ठाने रथा अलिविनयाने नार-

दरसहुक्की अरोमपुर्येकमेषुनी ॥ कर ॥ ४५ ॥ लवाविचार अलारि करि नारदसत्वरी ॥

शुभानियी असेलारि गमतरचत्वेत्तुहरी ॥ वहलेसे मिथुन काम शुरवत्वनसुरवकरी ॥

॥ कुमार संकुन तुम्हास आणीक संतावे वृद्धनेकेती ॥ कराया ८२५ ॥
येकुण मजर संतान असहयजे एपुभ लघु सुवी पुसेत व नारह मि भाष्टी ॥ लभ कुमार व
झाळ अधवा अविवा हैत वी असेवदो वे सत्यसत्य मजतसे ॥ वाप ॥ वदत सेनारहा
नुपाते वहुत हुनी ॥ झाळ न लगा परे नुपाते वदरी गुणी ॥ इ ३२५ ॥ नुपाती वद-
न वहुत लोवुडी ॥ येकुमर ममाने वयकूनी नीठनावी इउभामिती ॥ कराया ८२६ ॥
यापरे वाली करितान नारह नुपाती लगुसतसे अडे रणवा स वधाव असे ॥ वाटते स तुम-
वा मजहुण नी द्याअरा मजप्रलोवदाभा हुनी नुपवोडती ॥ वाप ॥ इ ३२६ ॥ नीचाजा
इनारद रणवासाप्ती ॥ वैधव्य वाल नुपमगेनी येतायती ॥ पाहोन वसाया कृष्ण आस-
नापती ॥ मांडन वहुविनयाने वसपया विनावेल सेवी राती ॥ कराया ८२७ ॥

वसावा नारद नमुने वदतसे आगमने ~~वैधव्य वाल नुपमगेनी येतायती~~ अपुके महृह पावे अभाजा हु-
लो ॥ येकुने सवी हैरापय करिती नमरका नारदोदर आसेवी वहुकुने मुदा ॥ वाप ॥
तव समिय नुपसुखा वधता राविलोपुनी ॥ ही कल्प कल्पका वैसल वहुत छूपिणी ॥

नृपमार्गोनिदद्वत्सेमवांश्वनंदेनी॥ श्रीबुद्धिअर्द्धपूर्विव्यवहृनारद्देवार्पोवच
लेजप्रतीकराच्चाप्ता॥ ३८॥ बुद्ध्या नृपांश्च पृष्ठराणि होर्मिरापूर्वे सांगुनी ३९॥
स्तव्याचेनारद्दुनी॥ अवाटेतरोद्ध्या अपरिवद्वा श्रीवत्ताद्वाणि राघवेष्ठिकृपा-
त्तसेवेसमय अपुलेष्ठनी॥ ४०॥ नारद्वव्यवेजलाचाटलेचाकडा प्रगमयामित
होरुनवाहीअस्त्यकडे॥ श्रीवृषभेष्ठुनीवारिलेव्यसाकडे॥ गतकालोआविमुखद्वय
अपुलेष्ठहीप्राप्तपर्ती॥ कराच्चा॥ ४१॥ लवपितयेनवभाक्षिसाहितआहारदानहेतुनीच-
सावेलेवेनयेउद्दासनी॥ केळानकुनीप्रश्नालयानामुक्तन्येचापूर्वीसांगीमोदेव
असेस्यप्रती॥ ४२॥ दृक्कानेप्रणायालेअवधीजोडीत्से॥ यदुचंडाकुट्टानलयडा
रोविसमज्याअसे॥ दृक्कुद्वृभहीनाराच्चापदावेसे॥ माहिवरद्वारावालेनगारिचा
हाच्चहैजपूर्वी॥ कराच्चा॥ ४३॥ ४०प्रादृक्कमेणीवदेनारद्वारुणकृपाद्वयक्षसं-
गीजेवालेनमाज्जागालेसे॥ घटलदानारद्वृहुहुबुद्धिने सावधानकामेणीसांगतोहरिव-
रिमधुवुणी॥ चाल॥ माहिवरीदृक्कसाराछ्वुलसुगमसे॥ यामध्यक्षरिकारंडपुरीसम
असे॥ मात्कुण्डमुपरीराज्यतेथेकारेलेसे॥ नवयौवनयारद्वव्यवहृन्दमुषणगमतकाम

संग्रही ॥ कराया ॥ ४७३ ॥ राष्ट्रदेवुम्बुद्धेसंपन्नवाऽप्यामीति गोवर्धनकरी । पलुनीकरण-
लीवरधी । दुष्टचेत्पुलनलग्नधनीअगाधयमुनाजलीपरालियाप्यगवर्णनेहेकी । चलम् ।
संग्रामुनिवंसाचाप्युर ॥ द्विमादेति ॥ दृग्नाकर्त्तुलुभुलक्ष्मेसलसवित् ॥ कुरुनियामुद्दद्वा
दिकासपकविते ॥ नोमिनाथ जिनबंधुअसेज्योदैवर्घ्यन्विती ॥ कराया ॥ ४२५

नारदवचनाभवुन्छविमणिवदत्प्रियमागोपिता करापकायसुवेनामेति ॥ वैयोद्दुआर्यारारेति
पितृशांतकरीनेजमनोहररेता नेइदेवभाजिनयुता ॥ चलम् ॥ ममवचनरुद्रवज्ञमात्रपिता
जिवितेते ॥ त्यात्मायसोक्तनेववचनाविणुतेते ॥ लववंचुसेवहीमातजाहृतीअसे ॥ द्वित्तुपाते
समानुनेतृपकासिकविकार्यसमाति ॥ कराया ॥ ४२६ ॥ हरेरेकतामुमोक्तुपता गोप्यरासपु-
सवरेमत्तासंदेशापत्तिअसे ॥ कवणकारणेरापत्तिपत्तिवादेवर्घीवर्घीक्षुभुनेष्टुपत्तिमना-
चीहृती ॥ चाला ॥ लोवौत्तममुक्तिवाक्याअमुतापृथी ॥ दृग्नाज्ञानिकाप्रवाचुराहैतकरी ॥ ४२७ ॥
वोपुण्यरिपुद्गुलनीवअघहरी ॥ कीवला अनुपममाणिद्वस्त्रम् अंतिकाससङ्कल्पी ॥ कराया ॥ ४२८
योक्तुपत्तिद्वित्तुपाते ॥ मिष्ठकाहृतेरवित्तवैष्टवीप्रवहुतआदे ॥ सौम्ययोवेवाकेताहृ-

શ્રીલે પુનાવાનું નિયા જાહેર નું પાલે / સીરોફુજાં વાચ્યા ॥ ૧૮ વારે ॥ લઘુ કૃપા દે પૈલચ્છાલ હાતો-
કુની ॥ મહાદુર્મલાનું ગૃહી રદુન જાવે રમતી ॥ મરીદાને ય અસત્તા ચાહુર તાં સ્થાની ॥ ૧૯ વારે જાણે
મજુલું હાંદું દુન ધરાત વાસંય પણી ॥ ૨૦ વારે ॥ ૪૫ ॥ મ્રિષા ની બુન કૃપા દ્વારા નાલો હણી
નાલું લાંદું દુન ધરાત વાસંય પણી ॥ ૨૧ વારે ॥ દ્વારા જાયા કૃમાંગાં રાન્ય રાહીલ રાસું વારી મારી ૩૩ મરા-
કુનાં ॥ ૨૨ વારે બાહુપરી ॥ ૨૩ વારે ॥ ચાન્તાં દ્વારા ને બાદરો સંપ્રાદાન ॥ ૨૪ વારે સેન્ધ્ર વાને સુભાસ્યાળે
ધરાન્દા ॥ ૨૫ વારે હૃપાલા જાનું નિયા મટણો ॥ ૨૬ વારે ~~સ્વા~~ મિળોની રૂપાંકાંય સંવ રૂનુ
પુરીસયાંત્યાં ॥ ૨૭ વારે ॥ ૪૬ ॥ દ્વારા કરાન સંભાપાલ ચાને કૃસુસુદુર્પાદિલા દ્વારા દ્વારા ને જ
કૃપાનું વાને બાદે પાલે ખ્યાભનાં હણુની જોડિંગ માટે જીવાં ચ્છાયાં ચ્છાયાં ॥
૨૮ વારે ॥ ૨૯ વારે કરાન વધુન હષલા બાદે પતોની જાંમની બદિંગ રામાં અસ બોધુની ॥
૩૦ વારે ॥ ૩૧ વારે ~~સ્વા~~ એ દ્વારા કરાન જાંમની ॥ ૩૨ વારે નોગ રાનું કારી તસ્વ રે જાયા
કારી ॥ ૩૩ વારે ॥ હ્યાસંભાના પ્રિયદી મુદ્દિલ હોઢુની ॥ વધુન હૃવણો વધુન હૃવણાંતવ નું પારી ॥ ૩૪
વારે ॥ ૩૫ વારે ॥ ૩૬ વારે ॥ ૪૭ ॥ ૩૭ વારે કારેન બધુન જાને અસુલ્યા માત પ્રિય વધુની સોચારે
પદ-વેન સેમાદિની ॥ કારેન ત્રયાં હૃવી સંગત વિન નાં વધુન પ્રલીલ વધુન મસ્તાને સાચ્ય
રૂપમાં ॥ ૩૮ વારે ॥ મિલુનિયા વાચ્યા પ્રિતુધાગોની બધુન ॥ કરેગમનને જુની નારું -



ਕੁਨੈਤਰੀ॥ ਚੋਲਾਸਿ ਗੀਰੀ ਵਜੇ ਜਾਵੀ ਨੈ ਯਾ ਸਿਵਰੀ॥ ਚੇਮਲੈ ਨੈ ਰਾਬੀ ਪੀਂਚੇ ਅਨੁਪਮ ਜਾਇ

ਛੁਹੈ ਪੁਲੀ॥ ਕਹਾਇਆ॥ ੪੮॥ ਕਿਮਿਤ ਥਾਪ ਨੇ ਜਵਜਾਤਾ ਨਾਰਦ ਬਧਲ ਕੁਝ ਨ ਤੋਹਰੀ। ਤੇਜ਼ੀ ਨੇ ਕੁਝ ਸਾਡੀ॥

ਰਾਹੀਂ ਸਾਲਰੀ॥ ਫੇਲ ਨਕਾਰਾ ਨ ਬਸਾ ਵਾਅ ਸਾਲਾ॥ ਕੇਨਾਵੀ ਨਾਰਦ ਪੁਲੀ ਲੇ ਇਲਾਨ ਮਰਦਾ ਪੀਂਚੇ ਬਹੁਪ੍ਰਿਤੀ॥
॥ ਕਾਲਾ ਬਸੁ ਨੈ ਧਾ ਆਖਾਨੀ ਕੁਝ ਲਹਾਵ ਦਲਾਸੇ॥ ਤੁਹੈ ਅਗਿ ਵਾਹੈ ਪਾਮਿਸਾਰੀ ਸਾਹਮ ਮਰਦੀ॥

॥ ਚੁਭੀ ਸਾਂਗ ਪਾਹੈਂਕ ਅਨੁਲਾਵੀ ਨ ਵਲਾਸੇ॥ ਕੇਨਾਵੀ ਕਾਨੁਕ ਪਈ ਅਨੁਪਮ ਵਲੁਝੀ ਸਾਡੀ॥ ਚੁਭੀ

॥ ਕਹਾਇਆ॥ ੪੯॥ ਹੀਰ ਬਾਕ ਧਾਰੀ ਨੈ ਧਾ ਨਾਰਦ ਕੁਫਿਤ ਚਿਚਹੈ ਬੁਜੀ ਵਾਰਵਰੀ। ਚੇਮਲੀ ਤਾਤ ਬੁਝੁਣੀ॥

ਬਧਲਾ ਚਿੰਭ ਟਾਲੇ ਅੀਹੈ ਤਕੈ ਬਲ੍ਲਪ ਜਾਹੁਲਾ ਗਮਲ ਦੇ ਦਾਖਨ ਦੁਆਰੀ ਪੀਂਚੇ॥ ਚਾਲ ਪਲੀਵ
ਜਿ ਚਾਕੀ ਲਮਾਨੀ ਚੇਤਾਰ ਲੁਕਾ ਰੇਤਸੇ॥ ਹੀਨਾ ਗਜੁਨਾ ਵਾਲੁ ਰਾਹੁ ਵਰਤੀ ਗਮਲ ਸੇ॥ ਹੀਨਾ ਪਾਤਨ ਮਜਕਾ

ਲੁਕੈ ਮੁਲਾਨੀ ਸੁਰਵਨ ਸੇ॥ ਏਚੇ ਚੌਹਾਰੇ ਮਸ ਪਰਸ ਮਨੋਹਰ ^{ਸਾਡੀ} ਸੁਦਰ ਕੁਲੀ॥ ਕਹਾਇਆ॥ ੫੦॥

ਕੁਝੀ ਵਾਨ॥ ਗੀਣੀ ਸਮਕੋ ਸਮਲਾਵਾਂ ਬਕੈ ਸਲੁਵਕ ਸਾਹੁ ਦੇਖੀ ਰਾਮ ਨੇ ਅਚਵਲ ਦੇ ਸਲ ਸੇ॥ ਕਾਨੁਪਥ ਨੁ
ਧਾ ਸਮਝ੍ਯ ਮਿਵਦਾ ਨਾਰਦ ਬਾਫੁ ਕਾਫੀ ਦੁਰਾਂ ਆਈ ਪਾਵਕੀ॥ ਚਾਲ॥ ਤੇਜ਼ੀ ਵੱਡੀ ਉਮੀਦ ਮੇਦਾ

ਸਮਸਲਕ ਸੁਦਰ ਰੇਤਸੇ॥ ਹੀਨਾ ਨ ਪਾਂਚੀ ਰਾਕੀ ਬੀਜੇ ਗਮਲ ਸੇ॥ ਹੁਧ ਨੇ ਲਿਂਘ ਕੁੰਮਾਕਾਰ ਵੱਡੀ ਮੁਗੀ
ਦੇਤਸੇ॥ ਲੁਲੈ ਹੇਸ ਜਾਗੁਵਾਂ ਕੇ ਸਾਰੀ ਕਾਟ ਸਸਨ ਾਜੁਕ ਕਿਨੀ॥ ਕਹਾਇਆ॥ ੫੧॥

हस्तवर्ती भूमि का समजान्दा कहा गया है। यहाँ विभिन्न विषयों का विवरण है।

विभिन्न विषयों का विवरण है। जो सब वित्त उभयनी है। विवरण में विभिन्न विषयों का विवरण है।

हेमन्तों के लिए इसका विवरण है। ही प्राप्ति का समान विवरण है। ही मिकल का विवरण है।

दुर्जन्मेत्र है। दुर्जन्मेत्र है। ही मिकल का विवरण है। दुर्जन्मेत्र है। ५२५ विवरण है।

मीठामेत्र है। नारद माने विवरण है। विवरण है। नारद माने विवरण है।

दानसुन अस्तरा मूर्मिका विवरण है। अस्तरा मूर्मिका विवरण है। वाला। कुड़ा। पुरमाहौर

नारद सुरमाहौर विवरण है। विवरण है। करितस। कुछासदुनी सुजना। सुख-

विवरण है। श्री जीन मजनों अहोन विवरण है। विवरण है। ५२५

पटराणो मीमतीज विवरण है। सुदर्देश मानदृष्टि विवरण है। विवरण है।

ही दृष्टिमानो विवरण है। अस्तरा मूर्मिका विवरण है। वाला। ही नसुन

विवरण है। विवरण है। ५२६ विवरण है। विवरण है। विवरण है। ५२७ विवरण है।

मायरीका विवरण है। विवरण है। विवरण है। विवरण है। ५२८ विवरण है।

५२९ विवरण है। विवरण है। विवरण है। विवरण है। ५३० विवरण है।



नाददर्शनमुरारीवेणहोय। नेत्रपत्रिवदेत्वनारदहरेत्तदुनी॥१८८५॥ त्यजेहास्मि-

नला रात्रेवेष्टनो। त्रैरस्त्रापुजावेनाच्यस्त्रकामेण॥ दृश्यमेयासजगतो को-

मेकं प्राप्तुनी॥ व्यारेष्येवीकायरत्तवारुनीवदत्तमुरारीष्वती॥ कराया॥ ५५॥ कृत्वा अर्जु-

पारेष्यन्नहरेण। गमनेत्तदुनीकरीपरीभूनीवेत्ताकारिकीहरो। प्राप्त होयके स्यापरेष्य-

होरथानपानत्यजत्तसेनाम्बुद्धके त्रैपहेत्तवधात्तसे। वापि सात्तनीकथेष्यरथेवंकु-

उपापुरी॥ जावानेवद्वयापाठकगणत्यवरी॥ पर्वत्तम् २२, १५५०॥ त्रैकुःखेत्तके १०८८।

॥ नृथपनरंजनधमित्तमपारेप्राप्त होयनि। वेत्तामुरेण ५४६॥ ५३३। लिष्येदिनसमिप

दाहित्या। त्रैत्तुप्राप्तेष्य। त्रिकीषुभिका। कुँउपुरित्तमभवी॥ आत्मियाभिका। त्रिलभा

स्थुनी। त्रैत्तमिष्यो। वेत्ताकरीजातसे बनेजाम्बाप्त्यन्त्यृष्टी॥ १८८६॥ वदत्तसेत्तये।

पृथ्वृत्तकुःखुनी॥ जातिवेवाहेन्यमजहरीदयेष्युनी॥ लविवृथाओम्बम्भ

मिवनजागिरहनी॥ परमवृत्तस्थुनीयाजात्याघोषेत्तिजपृत्ती॥ कराया॥

पृथ्वृत्तकुँउत्तदुनाधावारुनस्त्वरुभपत्रारेत्तुनीया दलसेग्राउग्राउदुनीया॥ अस्मी

मसविच्छासपानत्रनाजुकत्रुजवात्तुनी॥ १८८७॥ हनकीकुसराकुहनी॥ वाक्ता घोकारी

दुनष्टमार्गे जाइलयुनी ॥ वाटलाव्याघल दुम राकुन बृहत निरवुनी ॥ जाह्ला ह-
र्षत्या कहावले प्राहुनी ॥ रमणि दालरवणि गोपुरव्यवस्थावाटत अमरावती ॥ कराय
॥ ५८ ॥ कूनबृहत आश्चर्य वाटला राजमणि प्राहुनी पौचला राजदुरीजावुनी ॥ बृहुनदूर का-
लासवल्लसे मुरागेसमन्मुनी सांगि जेसमा निरोपजावुनी ॥ वाटल ॥ नवदूर हनसे उत्तर बृहुतो शुनी ॥ भुक्त्या-
मी कोणकोठनी ॥ कायणे कले सांगा समजावुनी ॥ नवदूर हनसे उत्तर बृहुतो शुनी ॥ भुक्त्या
पुरिच्छमिष्टन्त्रयन प्राप्तवेठ मजपती ॥ कराय ॥ ५९ ॥ दूरपाट जावुन हरीसांघन्मुन
वृलकथनसे दुनाव्यं सर्वजासच्चुनसे गवदे हुरी नववेवुनयात्यसन्मानुनेसत्वरीनला-
वी वेलंबयाय्यकरी ॥ वाटल ॥ धक्कानी दुलाल दूरपाट वाटपत्ता ॥ नवमुरागेन त्यावृपारे स-
मानिना ॥ हरिसमापाहुनी दुलमनी तेष्वला ॥ नमस्कारुपीदुलज्ञोडुनी कर श्रीकृष्णापली
॥ कराय ॥ ६० ॥ दूरलकरी संकेत हरीते स्थाने कांती वला सभेलालहाकुण्ड्या बोलता ॥ ५३ ॥
ज्ञ असे वरस्वास्त समारीलहासवतो युनी जातसे आश्चायीलहोवुनी ॥ वाटल ॥ नव
दुलामुरारी वुसेतुमही कोठनी ॥ कायणे केठे सांगा समजावुनी ॥ वहलसे दूर श्रीकृष्ण
वृप्तज्ञोडुनी ॥ भुक्त्या पुरनगरीत राज्यकरि दूर मिष्टमूपती ॥ कराय ॥ ६१ ॥

प्राणवल्लभान्या भ्रीमीतीषुहरापीरापीनासोशुवेउपमेताकुजिकी॥ पुमतया
उपरज्ञुजपैतृ-दी.

रुप्यक्षेमरउमनामेवकाविअस्तेउपरत्वेजयत्वंजपुरमतसे॥ वारपा॥ उपुक्त्वा अ-

दिइयरूपवानरावेष्टी॥ बद्वयावेनशुगसंपन्ननमीवाद्वी॥ जपुनागाकुपरिवा

मासवेसोरोद्वी॥ सुडाहसुदरअंतपांगिवृष्टिवृष्टिवृष्टिवृष्टिवृष्टिवृष्टि॥ वारपा॥ ४२५

चोरक्षेमसंग्रामवुमारेदापिक्षेमवाकरणेवेदिवालेसंभानीषुहरण॥ संभानीप्रि-

त्यर्थसूपकेहर्षितहोवुनिमनीभागिणीप्रीत्यर्थक्षरीव्याप्तिशी॥ वारपा॥ वुमतयापी-

यास्यारीकक्षणिया॥ येवेनस्वगृहीवलकृथीझालिया॥ मगसर्वआपकारेवेदार

रेविरवसुनिया॥ योग्यदरवुनीस्यारीकहीकुटिक्ष्मनुभुमतियो॥ कुराय॥ ४२६

मावशुक्तुमीविवाजितहोष्टवेधीकाढुनीकरितसेलवासुजुकवणी॥ अक-

समानदिनेकुसञ्चनारदप्राप्तहोयेवुनीवसाविळा। अस्तेक्षरकासनी॥ वारपा॥ उल

वल्लीनेनारदरणवासीजातसे॥ लवमिष्यमगिणीसंभानुनिष्वसवीतरसेपगृहीवलुरालेव्य

रप्तुसरीकुणिहीनसे॥ करनेपादप्रदृष्ट्यात्यधीरुसत्त्वेमकुडात्तीपकरण्या॥ ४२७

समिपउभीरुमिणिभयाहलानुपमगिणीलाकुरनेवेहीक्षवणक्षन्यक्षाअस्ते॥

दृढ़वरन्तु प्राप्तिर्वाचामि लभ्यता संगुनी करविके नमनवदाहुष्टी ॥ अस्यादेष्विक
अप्सर्वहरे दूर राष्ट्रो अस्मा ॥ जामाद असुररथ्यकामि दूर यसा ॥ हरि वंडा
उत्तरामणीलकर्णमेरविजसा ॥ नारद नेथुनिजात्माकमिकरण्हेतसे अली ॥ अस्मा ॥
॥ इदृ ॥ रथनपाननव रथतियेल इपननयनाप्तीमासतेउच्छारवीच्छुती ॥ कायुरमेश्वि
तमलयागितिवा वंडनलयनक्षेत्रे लुहु विभृतवनवलिजटो सुन्धे ॥ वाप्तमस्तुनिय
आरु द्विष्ट्यस्थं बहुपरी ॥ वेदोनिजापतवनामवज्यकरोजारि सखरजावुनपाठी
भहुननवकरी ॥ इतिरुपादेयवुनकारिडग ॥ लारि मृत्युनी देवती ॥ लक्ष्मी ॥ दृष्टि ॥
गिर्वाकहनववनासकुलाच्यु हिष्टेसेमीहरीकरितासेकुलमध्यासखरी ॥ येवुननवेकठे
करवामुकाम्हृह सागरो लियन्वेकुड हृयमेटण ॥ वालपतवदुतवद्वलमुहु हातजोडवी ॥
सागरो सर्वहीत्तद्वयेकुणी ॥ नगरीन्वोनेकटव्यमदनवुपवनी ॥ अद्वाकराहवेल-
कीनिराजिलकर्म सुविकुचुभाली ॥ करामेपद्मा ॥ लियेहरमेष्टीलवअमिलहुयद्वल
हेनीमेतीपुजायाकमेदवलीसवी ॥ हुमुनसंगतो सत्यतुहुली वरितलियेयेवुनी पा-
हणेवाटयेहरमेष्टी ॥ वाप्तमजारिलुहिन्व अस्युप्राप्त्यजिलसुदरी ॥ कहाने-

या द्वितीय व्रतरब्दवत्तर कुटुंभरी ॥ जारि विष्वेष्वको रुप धर्म से दीप स्थिर हुत्या
 हुमन सागर में सन्धिकरि लिज प्रतीप कराय ॥ ३६८ ॥ तुम्हें अंतुनी वचन कुत्वा एवं परितोषक
 द्वितीय वोकवी वहुपरि सन्मानुनी ॥ लहर वसुनवलभद्र मुरारी वै चार नीर खेल करी जा-
 वया । दोषावे कुठणपुरी ॥ ३७९ ॥ दाये वयल अच्छद्यादीष्वगतीजुपुनी ॥ करी व ३८०
 मुराल हल रवडुल अंधुनी ॥ मगथास्विमरात्रीगमन करी लेचुनी ॥ वकर वृष्टवन आंग्रेया-
 टपारी कुठणपुरी कुरली ॥ ३८१ ॥ ३८२ ॥ बधुनप्रभदउद्यानउवरली रचातुनी सरवरी व्या-
 कुनी धेय खेवे वहुपरी ॥ नरभयै सिहास प्रभवलज्य हुय वाण्डव लेष्टलीलपुनिया
 ३८३ ॥ ३८४ ॥ ३८५ ॥ ३८६ ॥ ३८७ ॥ ३८८ ॥ ३८९ ॥ ३९० ॥ ३९१ ॥ ३९२ ॥ ३९३ ॥ ३९४ ॥ ३९५ ॥ ३९६ ॥ ३९७ ॥ ३९८ ॥ ३९९ ॥ ३१० ॥
 वाट साल विघटली ॥ ३८१ ॥ हीमाल ठंडुनी उथ पहुन्नारहा । लोयेके स्थानी स्वस्थव-
 सना कहा ॥ जानुन कुठरी उदीवेनव आपहा प्रदावति हुन निधवर स्वर जाइ चंदरी
 पती ॥ ३८२ ॥ ३८३ ॥ ३८४ ॥ ३८५ ॥ सन्मानी इति उपाळनारहा वहुलपरी लोषुनी वस्त्री कनका स्त्रीले पूजनी
 ॥ स्वलाल वसुनीय आसनी दुसर्य गुज वाली वोठती हुसरेत वन्नारद नुपत्ति प्रत्येप
 ॥ ३८६ ॥ ३८७ ॥ ३८८ ॥ ३८९ ॥ ३९० ॥ ३९१ ॥ ३९२ ॥ ३९३ ॥ ३९४ ॥ ३९५ ॥ ३९६ ॥ ३९७ ॥ ३९८ ॥ ३९९ ॥ ३१० ॥
 वाट अंडली धेय उपत्यहा वीलसे ॥ सनेह वरी धारी दावुन नारद वर्दी द्वितीय पाल्पती ॥ ३११ ॥ ३१२ ॥

१७९॥ द्वावेलुस्तीमजजन्मपरभेकाषाणियद्वजप्रत्ये इउआइमहरवावेसोफलकेत्पि
इटुपलेद्वानेद्वनेकान्नरदबवत्ताहस्योंकरितरेट्वे-वारुव्युम्भुनीप्रवापलव
विचारांवधारुस्य गर्कपरला ॥ इटुपल्पुसेट्यक्तप्रास अप्पाप्पाप्पाप्पा ॥ का
गर्कपाहुङ्गाइमअरुमाज्याता ॥ सांगयनेवरविचारकारणसुरवदुःखा
देखकित्पि ॥ बद्धग्नाप्प७२ ॥ बद्धलदान्नरदलवदुःखुनेकष्टदेहिलवद्दिसेहोइ-
जे सावधान्विलेप्य ॥ रससेन्यजावेकुंउणपुरिल्लाइरामारामाचारनीरियोहोइल
दाल्लरुसांगुनी ॥ वाल ॥ लवजाइलुनीनारदुःखसरीकडे ॥ इटुपलदरवेहोविचारा-
लेसाकडे ॥ घेयसधारनीवेदकायकाकडा ॥ मजसमेतकुणीइररनजागतीरणी
हरविष्यप्रती ॥ कराया ॥ ७३॥ रञ्जवुनिसंन्यात्करेनेधारीहुङ्गुओगेल्लावुनीपा-
वाग्नकुंउणपुरिजावुनी ॥ हसंन्याचापुरिल्लावेहाराजमवानेजातरेतयेहाणी-
वारवत्तेअसे ॥ वाल ॥ अवलसेल्लिमीवेधुसुहितयेहरी ॥ इटुपलनुपतिवेसे-
न्यवेछिलेपुरी ॥ लवकाष्टहोवुनीविचारकरीजातरी ॥ प्रमुद्गुपवनीकेसीजारुलहोइल
कुसीगती ॥ कराया ॥ ७४॥ व्यग्रवित्प्रान्तकमिल्लाअस्त्यलवदहत्तेमुक्तिलुज
कम्पकाष्टहोतरो ॥ वहेल्लिमीनेजातेल्लाइटुपलेप्रवुनीवेहिलेपुरीसंन्याच्या-

नीरा हार्षिका तेथे मुजाणे के स्पृपरी ॥ हुसंकट गमते मुजारी अंवकायरी ॥ लव आत्यन्ते
 जांडा वैद्य दुर्बुपरी ॥ जिनाजिन जिन जिन स्मरिने ज अंतप्रिय चहा वै संभवते ॥
 ॥ कराय ॥ ७५ ॥ विचार करनो अंतरि आत्यरु कमणिको घेचुनी सुधा सेने मेलयाइज-
 मुनी ॥ गरीब नाल मानो जांडा गमदव धुज गय प्रमदवन नवरी ॥ ८०८ ॥
 शुवो ने सवही कोट्हा प्रिय वै ॥ द्वित्तु पाठ सोनिके द्वाय दुनी रोके ॥ जावुने काँक्के
 द्वित्तु पाठ वाय ॥ नागराका तेज कमणिजाता रोकीय वै जपती ॥ कराय ॥
 ॥ ८६ ॥ घेद वै देवाली अंउवा तेज कमणिरोप सांगुनी धरलवा घेरतु द्विजावुनी ॥
 सोनिक जांडा नुपभणी त्या पिछवेवै दहत सेपु जाया कमराली जावसे ॥ ८०९ ॥
 एवा भाल द्वित्तु पाठ होय वुनी ॥ नागराका तेज कमणिरोप सांगुनी धरलवा घेरतु द्विजावुनी ॥
 द्वित्तु पाठ होय वुनी ॥ नागराका तेज कमणिरोप सांगुनी धरलवा घेरतु द्विजावुनी ॥
 हुवया प्राप्त द्वित्तु पाठ द्वियोयेवुनी ॥ गरकाकि कमदवासने वसहुनी ॥ ८१० ॥
 सोनिक जांडा नुपभणी ॥ नागराका तेज कमणिरोप सांगुनी धरलवा घेरतु द्विजावुनी ॥
 योवु हुरापी ॥ कराय ॥ ८११ ॥ दुन्हाजावुनी घेदलाको करु लोव द्वित्तु पाठ

प्राप्ति भवति यह विलक्षण समानी ॥ घे आदाल वरनि धर्म वेद युन समेप उपलब्धता
प्राप्ति मिकन साव कुरानी ॥ वाल ॥ वर आत्म रसव कुज्यास्थानि स्थिरतुनी ॥
वहल से न चरित्र जारूर वरय युनी ॥ देवता पुजार्थ अष्ट्र वेद वुनी ॥ जे-
इन्हाँ किमित्वे तेयुनी इष्ट प्राप्ति वारूरा ॥ चै पुरवाने जागुन अ-
लि औत्सुक्य हुंडि मुगारे प्रती मिरामि रात्रि दिवारे प्रती ॥ कुंज बनी हृषि-
कुल्यास विमाणिला भूमि करित वरो विवाह माने देवता ॥ चालक परिवर्तने-
इन्हाँ जुक अगी असो ॥ ३३ महाद्युम्न वधामुविहिज समुक्ति न त्येष मुख्य वुनी वंद
र-प्राप्ति वृवारो ग्रहणरे ॥ रात्रि के समुक्त वधुल हरिणी समन्वय भृत्य भासती ॥ जगाय ॥
॥ ५६ ॥ शुद्धावसमुक्त्य गारो असु अराद दृष्टि पारी ही वरीज तरकी वासो रेखे सही ॥
प्राप्ति वृक्षो करन समस्तन कृष्ण कुम्भावेगमेभुजाक्षय वृहित ताजगुरम् ॥
॥ ५७ ॥ वारो वरीवधुलो के सारी यरामूल जाहुरा ॥ पाहुता वरण वर महाराज कुमुक-
टप्रभा ॥ ५८ ॥ वरावधुल वागमत हंसवाहुरा ॥ मुख्य देवते उच्चवरो हृक अपि हरी प्रवीरा
॥ ५९ ॥ दोषकुनाय कुपुण्डिदयम अरोहनीय वुनी प्रगत हाति आमि हृकुनी ॥
हृकुनीय हृके समुरारी प्रवाट हृक युवनी वहल से अंतरांते लोधुनी ॥ ६० ॥

(१६५)

हृषीकां धीरुमी आदोमज पर्वता ॥ अर्थ सन्तवत्तरिता निज हुः सभौ वर्षता ॥ १८४
 रुद्रमेषी वधत यूसकं पला ॥ नतर हृषीकरत्त्वं पुनी वृहत मुरारी धर्मी ॥ कराच्च प८९५
 स्त्रीस्वभावत्तरिता ॥ १८५-१९० वृन्द लिल वृक्षरेति-वृत्तुनी रथी वेसवडन्तकरी ॥ वंच्छुद-
 वन हृषीकराने हृषीने छलकर्त्तुने रुद्रमेषी वसाविली व यांल अल्लोगुनी ॥ १८५
 वलमद्गुरुरारी व यांल वसता हृषी ॥ अलिवेगहृषी की अवहृतीलयुनी ॥ रथी
 वृद्धी वृहत पटमेदन्नाधाहुनी ॥ इंतव वज्जनवी हृषीराति युलयुद्धकराच्च प८९६
 ॥ एकराया ॥ २ पदे उहाका मिभाद्वित्तुपैठ ॥ २५ कास इकाने सर्वही ममववना
 दुको ॥ हृषीरावती-वा कृष्ण मूर्पमी छेदककन का रुद्रमेषी हृषीने अउवानिजये-
 वुनी ॥ चला जारी हृषी की असेतरे उत्तमामेयवुनी ॥ सोउवारु रुद्रमेषी परामेयुद्धनी ॥
 नव पुरुन जारुमी रणकेल्य वेयुनी ॥ यापारी वदुनी वंच्छुद्धकरुद्धमेयुद्धनी ॥ ज-
 राया ॥ २३ ॥ रुद्रकुनिया करुद्रमेषी हृषी वर्ती वृहुङ हुः रुद्रुनी वरोदयानिरवेच्छी क-
 रिनिजामनी ॥ २४ सासीहृत सन्यासचवुनी अउवाया हृरेहृषी द्वावल्लव-
 यावानी ॥ २५ कर्त्तु ॥ व्यापारुद्रुपक धवुनी सन्यासी वृहुत्तवरा ॥ वदत स-वा-

कुरुत्वा तजावुनी धरा ॥ लटुनिये रुरत्वेष्ट्रां धुनिये वध करा ॥ ३०८४-
रा करित द्यावत्तो सरोस्मा लटुपये प्रत्यनी ॥ कराया ॥ ३०९ ॥ अव्यंव्य-
दिनाहुनारवा चेत्कारुगजाव्ययेत्तुष्ठे भाट्यदादेशका धुन-वृत्तो ॥ ३०९३१२ व्यव्य
सननसुं पायदला हलिहरी अउविली वधुनसैन्यसत्तरी ॥ वालुराजव आमित्सौनिकास-
लीहुविमाणीवधलेसे ॥ करिविवार अलारिहुरुक्त आताकरे ॥ मसकारण ध्यना मुस्तुरव-
व्यिलं गमतरे ॥ कुठेरूपनव योवन झये सैन्यादेसत्तहुकिली ॥ कराया ॥ ३०९४ ॥ दुःखो
कुरुत्वालियावे अश्वद्वयेन ग्रीष्माहुनी वधलसे हलीहरी रुनी ॥ समजावीरहेज
सैन्य पाहतारुनी दुःखो करी देवुनी धोर्य इगक दुरकरी ॥ वालुरावीचास उपजवीनि-
ज इम्यासांगुनी ॥ तवे वहे हरीनिज प्राणधिये लव-मिनी ॥ मीहराणाव्यलहु सुभट सैन्य
जेकुनो ॥ मारुनेवा पक्वेवानी येतो वन्वन मानिनियेती ॥ कराया ॥ ३०९५ ॥ परेनवा-
टेसत्यालियेलावन हरीवे असंहुनियापुन्हारोक करितसे ॥ दुःखान्वेलवधु-
नियापुन्हारिज वहत माय झालिनी नकरित्व इगक वही पर्यागी ॥ वालुरामुख दुःखी

लुजाना अचाट किरते दावते ॥ घोरामे हिराकरे कुर्मिक न ता बिले ॥ लेखा लक्ष्मी
 रस्यास्ति कुर्मि रोदवते ॥ यो क्या बाण सान वृष्णि लाडा वे हरि प्रातिली ॥ कराया ॥ ४५
 परि कुर्मिणी कुर्मि इमि अद्वल पाहला हाथा र तलसे पुन्हा करि होवुनी ॥ लहा वे या री
 मुरारि ॥ अला हु त्रिमांग रा ॥ चमुरवी दोसे लुसांग करुया ने सुरवी ॥ लाला कुर्मिणी
 रा ॥ रेस वेदे हृतजोड़नी ॥ बहुविनये ने भी अशुधार आपुनी ॥ मम प्रथनी वहतट
 होवुनी ॥ रित्यावंधुरा जीवदान धा आस्वासनं यदुपती ॥ कराया ॥ ४६ ॥ लहा यह
 लिङ्ग कुर्मा ॥ लाला हु मुरुगा कुर्मिणी वाचाविन लव आपुजमी दृपी ॥ अमयदुरा
 मग
 क्षिवुनी हरि वन्वना पुस्तकला धावतो हरि कुर्मि लाला हु स्युगी ॥ लाला संग्रामिवि
 अद्वला आसीवन्व हृतसे ॥ हृति कुर्मि लाला राजा रुद्र करुया तालरा ॥ वेवुनी रो
 चारे पालि हृति कुर्मा लाला से ॥ रथोड़नि या द्वितीय पृष्ठ पाहला संवय वेवुनी की तीर्प
 कराया ॥ ४७ ॥ द्वितीय पृष्ठ ए सबे करावे लुजाया नीरणा धावला शरन् मुरुगा हृत
 पृष्ठनी ॥ लाला ॥ द्वितीय पृष्ठ है गोधुनी या करी धीलका ॥ धनुकरा लाला

सुनन करेत दाता ॥ हरि वृद्ध इति द्य मध्य लारे लोडा ॥ ७८ अंज-
रम् राजा घोनिका रेनव्या के यांत्रली ॥ कराया ॥ १०२ दुसरी कठुङ्ग-
राम आधुनी युद्ध करिल सेक्से कठुङ्ग जांगुहन जांव गणले मे ॥ अंगहाती कीति-
कन धुठे दणि गोपनी वी क०४-५ ना नकरे युद्ध पृहृत्य विना ॥ चाला ॥ कीति अंल समय
जाऊ ॥ ने हाय मुख वेकरी ॥ कीति कते द्यावुनी जिन जेन जामान मरी ॥ कीति चाउपाहु-
ला रण युक्त ती दुरवरी ॥ अंगते युक्त कीति पृष्ठ अंगु जांव गण अंगपाहु ॥ कराया ॥
॥ ११ ॥ द्वय बंधु करि युद्ध मयं करदेव नभी पाहुनी ॥ दोने आंश्य अर्थ बेला जिरु-
दी ॥ ने सुकुण साम चर्य हडोसी ये वुन युद्ध वया पचत सेषा वाण वाच वालया ॥ चाला
मा ॥ कून सबरा व्य सही इनउकरी ॥ द्रिवु याक ट्रष्णा वै इस्त्रमा रेला रसेरी ॥ पठल सम-
वेदि पाले ये वुन नेया तिर मिरी ॥ मारिल या वै सबरी हि सै चाह युन नेय चानेकी गुकरा-
या ॥ १२ ॥ कृष्ण कमर धे वुन नेया इस्त्रमा है समाइ ये वुनी परस्पर वाण सोडि को युनी ॥
वहुल कर्कट युद्ध चमकता आवारे न चुक्की लिवा वाकरि ल सेवि चारु रुप कुमना ॥ चाला धेवोन
लिह-वा वाण सोडि दुले धरी ॥ नव वाण हिस्ते इवही झाँफरे परी ॥ उठाने याव्युत सुपुकुर्ग

अरेण्यं कुरी ॥ अरेष्युत्तमं हृषीकेर्णीहृषीकेर्णीहृषीकेर्णीहृषीकेर्णी ॥ कवाया ॥ १४३ ॥ उमाराही वद
 लसेरपका ॥ श्रीराजसाकाननी धावलो तोहिसमृद्धपातुनी ॥ तापरिहृषीकेर्णीनेमन्यजर्जरन
 ना ॥ पाहृषीकेर्णीवांधिलाधृत्युत्तमसा नेमा ॥ वालपत्रवेदोने आणलाकाविमिपीत्सोपलग ॥
 ॥ श्रीइत्यपाहृषीकेर्णीहृषीकेर्णीहृषीकेर्णीहृषीकेर्णी ॥ वेवत्तेनेत्तास्त्रहृषीकेर्णीयुद्धमृद्धर्णा ॥ हृषीकेर्णी आलीष-
 अरमारम्भवार्णी
 एवानपरम्परानीहृषीकेर्णीहृषीकेर्णीहृषीकेर्णी ॥ कवाया ॥ १४४ ॥ अभ्याध्यमृडुनद्वाराहृषीनोंडी-
 इपाहृषीवारीपाहृषीकेर्णीनभद्रदीनेवरी ॥ प्रत्यारामणीहृषीपाहृषीहृषीवारीजय
 हृषीकेर्णीअंबरीवर्षीवीहृषीवसुमनभ्रवरी ॥ चाम्बा चापरीकरन्तुयुद्धासकामुम-
 दीहृषी ॥ लवमुरारीहृषीप्रमनम्भाजीहृषीहृषी ॥ पृष्ठवासदेवुनीअभयदानराहृषीहृषी ॥
 कुमिष्ठीच्यासमीक्षीयेसमिपवीरहृषीलवन्वहृषीमिली ॥ कवाया ॥ १४५ ॥
 नामिष्ठवहृषीवेष्टनीहृषीमणीहृषीकेर्णीहृषीकेर्णीनेयहृषीलेवदत्येवुद्धादया ॥ नागवाहृषीमम्भ
 वंधुवांधिल्यसोऽन्नमरवदीहृषीतसेवहृषीकष्टत्याधरी ॥ रुक्मानिवियेवेववनकृष्णहृषीमणी ॥
 निजकेरपकासोडुनेसंवोधिल्य ॥ वदत्येस्तुनेनेआरुअसेनमलार्णहृषीहृषीठेवीआमृतव-
 रद्विसर्वनवेरापनी ॥ कवाया ॥ १४६ ॥ मगिष्ठीजेसेकुमिष्ठीवहृषीहृषीनीआमृतव-

विसर्जियेवुनीगृहि अमुच्चयनोर्जे ॥ द्युमिनेयारूपक कृष्णाचे वननामीनेहात्तेऽन
अपमानेहवही बोलला ॥ वाल ॥ बलदेव कृष्णत्व अश्वरथीजुपुनी ॥ याठेऽनेऽनी
धगति संक्रियासमवुनी ॥ वनशाभानदलटुच सरवल निरस्वुनी ॥ हास्यवेनो-
दाकराने परपरगिरे रवति यो चली ॥ कराम ५९७ ॥ नंदनवनसमउभनीक गिरि-
राज पाहुत्तवी उलरत्तीदेशांतुन सउकरी ॥ मानित्ववः कृत्वप्राप्तुनीरुक्तमीणेत्तेक-
सेतनिष्ठनप्राप्तुदेयधन वर्ते ॥ याठेपकारे पाणीप्रसरविधिमुष्मुहुर्वधुनिया ॥
द्युक्तायसर्वहिप्रसन्नहुवेनेया ॥ कारे आहोसर्वहिवनभीसमवधुनिया ॥ प्रेमपुरः सर-
वानेरमतांना आनंदनन्वप्रेती ॥ कराम ॥ १०८ ॥ लितुक्षममनीकोणिकपुरुषेहार-
केतजावुनीकाषियलसर्वत्तहुपुनी ॥ नगरवासे जनगुड्यालारणोदिपमाहादिक चूक्ति
धरीलावुनीलुवसुरोभेषकरी ॥ वाला मार्गात चंदनीसठाधावद्यवरी ॥ गजमोत्तेपुर-
विन्योक्तसरांगुक्तयोकरी ॥ जनउत्सवकारितीआनुदुनेलुपरी ॥ दोत्तरपामुद-
गालबलात्तुवाघवाजती ॥ कराया ॥ १०९ ॥ पुरवासीजनयेवुनीगिरिवरहुत्तेकृष्णा
मेट्टेप्रेमवरहुत्तेनेहीमानेष ॥ वाहुनांतनेजानेजै वसुनीयापुरित्तप्रवर्तावय

वाहनेषु परीक्षा योनि यामि ॥ वाहनपत्र सर्वमिति भरजरोनिरानं कुपुर्ण कर्त्तव्ये ॥ त्यग्बुद्धपरीक्षा
 य नाद होतसे ॥ द्युमिति माटज गु अभ्युगति कर्त्तव्ये ॥ उल्लधरहरि धर्मानि कृष्णमिति
 सरथामाजिवेसती ॥ कर्त्तव्य ॥ ४० ॥ जनसमूहरनाकरुद्दीप्तिप्राप्ति त्रिपत्तेष्व-
 लामात्मिवाटनादिसे ॥ एविष्वापुरीतिलयूधाव्यानववधुवरज्ञात्युनी उत्तमिलत्रो-
 त्युक्त्यन्याचेपनी ॥ वाहन ॥ कुरुते तु द्युहा गिर्व्यक्तिरत्तिस ॥ कृतिसुअडा-
 युनीहारेव्यव्यवहारी ॥ त्रिक्वानेति कर्मां समजुन्वत्तिक्षमी ॥ माधिकाजकाठा-
 लुनवदली उच्छ्रेति त्वापवराय ॥ ४१० ॥ कृष्णमित्युक्ति अंगोद्यान्तां द्विष्वद्विष्व
 विश्वकूलमित्युक्तिवद्विष्व ॥ कृष्णिक्वात्तां द्विष्व धर्मान्तां द्विष्व उद्विष्व-
 द्विष्वनीपात्तां द्विष्व वरयेवनी ॥ वाहन ॥ निजवलिक्वात्तां असत्तां येजन्ता ॥ वाहन
 कुरुते व्यपुर्णनापारिना ॥ पावारिवती गुरुक्तिनानाया जातुना ॥ ग्राहन धासत धृष्ट-
 रपुर्णविनयलिक्वात्तां पात्तां ॥ कर्त्तव्य ॥ ४०२ ॥ खलव्यवतालक्तनां वक्त्रेतुक्तव्युत्तरीहासुनी
 वाहनेक्षणद्विष्वविस्तृतीक्तु ॥ गव्यानेलमाटा तुट्टा प्रालिविवृद्धेष्वीनवधती
 लयाकेत्तव्यसरी ॥ वाहन ॥ कृष्णिवदलिविश्वताजोडाउचमक्त्वा ॥ त्वर्गस्य द्विष्वद्विष्व

युग्मिद्विसलीलसा ॥ करोकमदवरलेत्रोमत्तमहिवरजसा ॥ पुण्याकेषुनव्योगकुक्ते
प्रापेदुःखमोगेत्यै ॥ कराया ॥ १०३ ॥ वहत्तुष्णीगतमाकेअतिदुर्धरतपआवट्याविनामि-
त्वं कानवायमपत्तिकुणा ॥ हथनदीकजवलयवृत्तस्यमहान्यामेत्याघट्या पुण्यनय
पापालभ्यै ॥ व्याप्ति ॥ हात्तोमप्रयंकरहुवसागरेनेत्तरो ॥ जागेमोहयात्तासमचोरि
वा ॥ विहीनरो ॥ कामानेदोरवनक्षेपात्तेत्तरो ॥ चमोवरत्याविननरोव्यजीवासद्वा ॥
समवायेत्यै ॥ कराया ॥ १०४ ॥ यापदिग्भुनीवन्वजनत्वेऽप्ति ॥ मुरदिलाविनहेतु-
नीत्यात्तीस्वगुडासजावुनी ॥ मिनुनसुव्यामिनिमगलगात्तात्तेत्युक्तपञ्चारलीव्युवरा
हुष्टेनिअवालेत्यै ॥ व्याप्ति ॥ रवणसावमहोनव्युत्तेजउत्तराव्यै ॥ ददासदासिष्य
त्यादिग्नुपरानिष्य ॥ बहुवस्त्रामूषणअपिलसाठवव्यै ॥ ग्रामेत्युव्युक्तुनसु-
रव्यै सवत्तकाविमोगेप्रत्यै ॥ कराया ॥ १०५ ॥

रथानदानदायनादेकअसनसवीहिस्त्रिमाणिवरीनित्यउ ॥ निमग्नहेवुनीकरीप
कुम्भावियोगेमामाधिष्ठकसुरतउसेअलरीपरीउमिमानेदुःखनकरी ॥ व्याप्ति
सुखस्थानसर्वेत्युप्युक्तमात्तुनी ॥ ग्रामसअठानित्याक्षणेवत्तेष्युप्युक्ती ॥
हुष्टेष्यात्तुत्तेष्युक्तमात्तुनी ॥

३१२/२०८

अपमानिती दृश्या इवापि लिजत्रिवी ॥ कराया ॥ १०६ ॥

नी ॥ ३ ॥ दृष्टि नी स्वप्नी जागृते कुप्ता ॥ कृष्णमणी वादेस्त्रिवी अन्यलोकनां वे

स्मृता हुन्से ॥ एत्याप्तीति होरे संग्रह किमणी श्रूयत्वात् अनुभवी अगातुक

सवरीति अथवी ॥ चाल ॥ रेनाथ सवल प्रजमानाम अवो ॥ लेज गृहीतुहो

मान कोधि नवजाता दैसे ॥ मज़िद का ये दृष्टिपूर्वक हुए सवरे ॥ भवते आति-

दाय सुदूर दृष्टिपूर्वी क्षिण्यस्त्रिवी अन्यता ॥ कराया ॥ १०७ ॥

अरुणपीठाप्तीति नी स्वप्नी वादेस्त्रिवी अन्यता श्रूयत्वात् अगातुकी विष्य ॥

मज़िद नन्द कुर्णि सुदूर मुवेहा गर्वते देव मनि असे दृष्टिपूर्वी लिजवरमध्यमाहि

न्से ॥ चाल ॥ नमका अभूषण नाकी जड़धारुनी ॥ देवा ओरोजा डेनाकुजो

मंगुनी ॥ सगलाम अलाभा पाही नवकाँकुणी ॥ रोकुन प्रतिचेवन रुक्मि-

णी उन्हावेद हरिपती ॥ लक्ष्मणा १०८ ॥ प्रात्पवस्तुकोस्याऽपि नकोणी अंगदुम्भग

लरो सुवर्णकोकुणी कुणी मूवरी अनी लियुक वृच्छनमस्त्रियोच्यारोकुणी हरितुष-

छेमंचका वरजा वुनव्यैस्त्रेम-चाल ॥ लितुक्यंत रुक्मणी वराय चुना घोडनी ॥ यानं-

सुपारी ठवंग प्रदेशात्मनी ॥ बहु सुंग रथे दृश्या तयावरी ठाठुनी ॥ पूर्विजायमुक्त
सोफ़ दृल्काय विरवावुनिया स्थानीत्वे ॥ कराया ॥ १०९५ रसस्वादुनी थुंके काकिमि-
षीउगाल बधला दृणी उचाले हरीरले चोकुरे चुकुरुनी ॥ इत्यपदरोधहुवाधला ॥ १२
दृणीक बसत्यावरी जातसे सत्वभासेधरी ॥ चाल ॥ पहुतादुक्कन की कुण्डा इथेयेलसे ॥
वाहे सवतनाथका मागी विसला असे ॥ हे गहन चवुपन्ये वासु क्षेष्णो चेनसे ॥ कुण्डा
यदोलेजप्राण रुद्धयेयम् कराले गमतका अती ॥ कराया ॥ ११०७ मृदृच्छातवरुहुये-
याचो ये इथेमहुनिया न इरकलमूला हेजाणा निया ॥ नव इमाआतांजाय-
नीदुमारे कठप्राटपलहुनियाइये चराही आता ॥ चाल ॥ पयापरी कठका समव-
चना रुत्वुनी ॥ वाप्रसन्न करीतेजमिष्ण बोल्द्यो ली ॥ कुरव्यक्षे मुख्यते निजक-
रासोकेरवुनी ॥ सुरववुना देव्य परीतियोगी हरीमंचके बोसती ॥ कराया ॥ १११५
पुन्हावदे हे मुगलो वानेमज्जा निहुयेलसे निजो ये इये चमतसे ॥ ठोकवदे
मामा झोडीहरीलानुसनपाठनीक विमणी यकले खेजे सवे मोगमोगुनी ॥ चाल ॥ तो
मोगमोग ॥ याहो पुनर्दोनो द्रोघरो ॥ तेजप्रसन्न करीला सुरवननुहाहा-
णमरी ॥ कुरारालतवसंगनाय खेलतरो ॥ धर्मत्याववभाष्णानाय
ममगुहि सोपयापत्ते ॥ कराया ॥ १११८

तव संग मीरा अनुपम वह लयरी मारी ल हुणानी हृति-हठा जाहुले ॥१॥ रसे वह कुनी
 रुजाकुय नीहोरी नीजलम्-वक्ता वरी न से ज्या इसो पक्ष कुर अंतरी ॥२॥ तब
 मामाय वुन हरि सान्धि बैसलो ॥ ये सुंगध धमध मजापु निया हृष्टो ॥३॥
 कवण धापो दून वस्तु दुकुले कागड़ो ॥ युले रो-रो-रो-उलान-व आध्यय
 मिले पकरा या ॥४॥५॥ करोरे रवे चारू पलेव रुनी काले स-व अंतरी असे धरो हृमज
 काले ल-व-न से ॥ सुंगध कीले हृद्य मधुप युजारव करी प्रोहुनी हृदा वेळा न-व मज़ा
 सोउनी ॥६॥७॥ हृने रववया सवल करे मणी घरी पाया वरी करीले से रवे वार नीज
 अंतरी ॥ नीहृत जाहुले गरे समझुनी हृदी ॥ उरे चृष्टवा करे करे मिले मुरी रवे वार वुने-
 या हृकु त्रिली ॥ कराया ॥८॥९॥ जापु ने सो मारे चुण्डा इकले द्वासता सुटव स
 मुगंध हड़ा रेगता ॥ लेप करी अनुपम सवारी याते वडाण्या करणी न माय हृष्टा जीये-
 या मनो ॥ चाल ॥ तव मंच कावरी हृदी उठोने व सवसे ॥ मामे सउच्छ लेप करी वध-
 तरी ॥ हृकु त्य अनुगल जापु ने या हृसतोसे ॥ हृमुखे लृगु ने युक काकायी करी से हृ-
 ती ॥ कराया ॥१०॥११॥ वर वावेच हरा रामी मिले मुख्य चालु क्षेष्ट्र इस्तमां वुका स्थड़ी

सर्वांगीतिलोपेला ॥ पुनहु वेदमसाविद्वाऽळने भो पद्मराणीलु असे वर्गविकासेत्तोकरनें धूकारे-
लरो ॥ ४५३ ॥ या परी कुण्ठलेजं सन असेष्टुपरी ॥ यायोग्यमामामनांते
हठुगाधरो ॥ यारे उचित्तमावन-वकोधदाविकववरो ॥ उपवायानिजभूलं हृस्युनी
वद्वन मुरारीप्रती ॥ कराया ॥ ४५४ ॥ पुरवेक्तवकां वृथाहारता मुगीयीड्डुरा ॥ एषी
नकाक्कलतुहु ॥ तुहुनी ॥ रति-व्यमुरवालिलउचिष्ठासुन्दरपिलअरपरोमज
सुववकरकरमलसे ॥ चारूलवकुण्ठलिजबहुलयरीहास्युनी ॥ मोरनेत्यअसावदे
लांगुलउचिष्ठाआयुनी ॥ दृन्ननेत्यवृलेवकरोधासुनी ॥ ठोकवेदमामायाअयु-
नवद्वन मुरारीप्रती ॥ कराया ॥ ४५५ ॥ सववमुरवीउत्पत्तिजयावीपतिइल्लीवांधव-व्य
डोलकां शु ॥ निमद्गोलेपत्त्य ॥ हसलाकाआश्चर्यकोवनेघालकुम्हादिसतरेकेक्कना
नवलमजासिकायसे ॥ चारू ॥ आलानहास्यकरे वदेलिलात्मीहरी ॥ धारोनिमानवसतरेसे
मंवकाचरी ॥ यसमिप्पैसलकीमामायेकुनत्वरी ॥ वदेनाथत्रैक्याण्येव्ययं भट्ट्यु
मजं प्रती ॥ कराया ॥ ४५६ ॥ लवमानेव्यीहीउच्छ्वापुरविन विश्वद्गुलसुंदरीसामं उम्मीक
नाविक्कावरी ॥ गुसेवहुनीउधारेत्तरो चेघालेमरधवमगतेचुनी प्रात्तेलवसवाजिथेर ॥ विम-
णी ॥ चारू ॥ पाहता पतोडा नमनजाकेमापीकरी ॥ वरधकन गतियोवा वृसाविम-वको

हरी॥ वहलस्थावेला वहला मूषणकरी॥ उद्धायणी समनुटन सजुनलूचालुवलना प्रती॥
 ॥ कराय॥ १९९८ सांगिनमी तुजज्ञेसे कराया नेसे वहरे सत्वरी नला वी विलंबा सवकरी॥
 ॥ वाटा॥
 द्विरोधायै मजलुमची आइा असेवन ब्यालनी नेसली रुभजरी घटणी॥ अंगांत बुटयां वी बोके
 गच्छ भवली॥ भूगर करी आमूषण द्विव्यरी॥ उद्दृतसे दुराहुंक मस्कावरी॥ नोने
 लाजलाला दुन हासल चला वदेसम यती॥ कराय॥ १९२०५ नेरु वेला वुला उपवनी वृद्ध
 वेले घुलफुल जलाइयने दावेले॥ पुख्या वरती भूगरपांचि वरि गुजार व पारतां हाथतार-
 पा मासम वधा॥ वाल॥ मदस्या वायुन वृक्ष अग्रहल तेसे॥ जणुबे धुन सलीला गमत नृत्य करि-
 तेसे॥ ऊधुगमेलोलतो पाही गान करते करते॥ मधुर नृत्य को यत करि कुदुकुदुटी॥ हु-
 रिटकी बोलती॥ कराया॥ १९२१॥ उनागमनाजापुन लभिणी वृक्ष हृषी मूषु निजयु-
 स्वस्था व्यती वृसती॥ युटे चालता विहीर अनूपमरत्न रंगिज उवेले पाइला मान साते वेमा-
 हिले॥ चाला जल अथा हजार चरुजला माजे बुड़ा असे॥ बहुहस हेनी करन किडार-
 मलरे॥ वर्खरा क जोडा सुंदर किली दिसलरे॥ वृह्ण पांचि धनदाट पाहला नंदन वन-
 मासली मकराया॥ १९२२॥ स्फाटे क शिकात्यास्थ की पाहुनी साते यत्यंकास नी मुरवा-

वरसत्यकराहेवुनी॥ कोनेरझारखदेहवामकामिद्युपविकी ३३२ निष्यन्त्रोही

वहस्तवद्वराहृया॥ चाल॥ कोरेहलनवलननवअकंपिरेत्यापरी॥ सांगेवे

जालसमुक्तिवन्तवरी॥ गुहिसात्मामन्त्रहृषीनियाअंतरी॥ मेटद्यावया

करोहि कमाणीवीवाटलसेवुणपती॥ कराया॥ १२३५ वहेअझापविकुण्णलिलाव

मामाहृषीनिमनीहावणेत्वरितवदेहाकमीनी॥ नहुवहेलिजेवसाक्षबंउपवनी आगता

गुहिजावनकमिपरी॥ चाल॥ सांगुनियासत्वरजायउपवनाप्तवी॥ बसतसेत्पोनीकुंज

वनीभीपती॥ प्रालेजालाभामावेअमृषणगती॥ मत्तग्राजासमउपवनिजाईसव-

सवलवधयाशती॥ कराया॥ १२४६॥ प्रवेशालाउपवनामामाइकवरीवसत्याराविम-

रिणीसनवेकरीपाहृत्य॥ नानापृतेवेकृपविवेकृपा। निजमनालकारेलसेवदही

वानदेवीगमनसे॥ यात्रा। वाकुणासिद्धधुरूषाचीकुहिताअसे॥ केलरीअप्सरा

झावेघरनीगमनसे॥ वानागकुमारीरानिरोहिणी। देसतसे॥ लक्ष्मिअसवासवस्त-

लीरामतउमोमर्विक्तुअती॥ कराया॥ १२४७॥ प्रथमिद्युमाद्यगमेमलाहुवनदेवीप्रगटी

द्यावयामेत्तदेवाप्ती॥ पुर्वपुण्यज्याप्रगटज्याप्तगदेवमेटदलसेअधाद्यप्राप्तनकुणी

त्यापुसे॥ चाल॥ जारिमावमार्गेअराधनहिजकरी॥ लरिप्राप्तउष्णवरहुएते-

ल मज सुख करी ॥ वृद्धां वरेन मुरारि सनितय दास जय धरी ॥ मय अद्वितीया हीरन व
 ज ॥ लेल मम सोरत्यानव मिली ॥ कराया ॥ १२६ ॥ विकारन व्यवरिमो मेने विहीरी वर जावु-
 नी सोडत्य वरभन भोवुनी ॥ करु नसनान वहु कृष्ण अपि देवी संअर्पण्य प्रतीकृशि से अर्चन
 वहु सन्मती ॥ लाल ॥ करु नियान मन देवी समाके आदे ॥ रही निति मी वंचना स वेद प्रियं
 रे ॥ जे भाके करते लवल यास कराहुरे ॥ लवदरीन नव निदापत्त हुणी वरमागत नुजपती ॥
 कराया ॥ १२७ ॥ प्रसन्न हो मज करने वृपामम मके होय यी हरी वरों कर सम आजा अवधरी ॥
 होवुनिया आस कर मज वरी कष्ट क्षिपणी वरी होवुनी प्रेम करी मज वरी ॥ वरल पुर्णवी मनो रथ देव
 देवुनी वरा ॥ अवधीन रुक्षिपणी येष्यं ये करित्वरा ॥ मीमाव भक्ति ने इत्य सुरवी मज करा ॥ नोकटो-
 वल्या बैल जसाय ले मम मागे पती ॥ कराया ॥ १२८ ॥ विन वुन हो सन्मन करि लसे पुनः पुनः देव ॥
 वरद वरे आसि विदे मला ॥ लवाकुंजे वृस्त्य हरी नैलेला सर्व पाहुली सत्यमापवीजा जाहुनी ॥
 ॥ १२९ ॥ नेघुनिया लेयुनी पोट धरन हुस लसे ॥ वहु टाल्य विट जी मर्म वन्वन वरद लसे ॥ मय श्री यशो-
 किजे वन्वर्दिल करु वरथिलसे ॥ हरी यजन रग क्षिपणी के नैलपती नूमुनी वरण पुती ॥ कराया ॥ १३०
 ॥ हरिवन्वना जव उमज पृथम निमामेलो एकुनी वहल से गमन ही वर्का क्षिपणी ॥ परस्पर हैज-

क्षोटेविसमजुनोनमरकारकुरा नेया महोनीत्कौटीत होवेनेया ॥ वाल ॥ माने ओधदावु-
नी चलुराइ करलसे ॥ वर्मिप्रसन्नतादा व्यानेमुख्य वृद्धसे ॥ तुम्हीटीरोमणी मुरवावैमूला गमलसे ॥
बाट्य कुराइ क्षेत्राज्ञ हिमासलगोपलान्येमजपती ॥ कराय ॥ १३० ॥ जहानासमनियकावह
मुरवीकाधि नचकरी विधी वी मूल झापड सेरवी ॥ उसे भिरवडी जगत् भै ईयमि अकृष्ण रुवही नेसग-
मेमजघुठवी होइलकसे ॥ वाल ॥ उमाजितुम्हानवलकाय वाटल ॥ महुनियारवदरवदाप्तेघरनहा-
सल ॥ सुवलीसमागिणोजायुननमस्कारिले ॥ ह्यंलतुम्हादिसतसेकाय उपराध अहोम्यपती ॥
कराय ॥ १३१ ॥ उपरिकृष्णोबघुनस्तु एमेसलदातेयुनीजातसेगृहीमानधारनी ॥ नंतरकृ-
ष्मिणीपतिवानेभायालिजायुनीचरितरेनमस्कार उभुनी ॥ चालपतवभामाउठवीरुविम-
णीसआदर ॥ देआलींगनबाहुलधरनहयकरे ॥ वृद्धसे नेयेकायेमुरसरत्वरे ॥ ठीक असका
स्वास्थ्य भागीनेत्यर्थागसांग मजापती ॥ कराय ॥ १३२ ॥ सालोमजलालुझ्यकुपेनेअसेसदासर्व-
दापाडलानुजटकनीआपदा ॥ हितउजाकरिताभामारुक्षिणीबहुप्रेमेलेयुनीप्राप्तीनेजगृहासये-
हुनी ॥ चालगादिनेयेक्षेयाहवरभास्थानेबैसले ॥ बलमहमुरारीनेजआसनेप्राप्तेयायरा-
माट वज्रांज्यांडलकासनगृजले ॥ लदाहुतये दित्तियतीचा हुरेसमेट्यपती ॥ कराय ॥ १३३ ॥
नमस्कारक्षमीकृष्णा विनयेक्षेयवहुप्रेमेदुनीदा वित्यस्थानेलदाबैसुनी ॥ दुर्गोधनहुस्ताचे
पुभामंचालोहलसेमंभेतवचाचुनदारेवलसे ॥ चाल ॥ जयप्रथमारिशानानमःसिद्ध

द्वारुनी॥ मैरीमेलं तुपाठेकरण अरवोडेतगुणी॥ नृपअग्रेसरपदनारायणं अभिमुद्दनी॥ यदुक्-
 तनायकवसुदेवतमजं असरवोडेतमुपेती॥ कराया १३४॥ नमस्कारलुहामअसम्भवाते
 विनयमाटेनेवराचारोपेकरणेवेनवृण्॥ कृपेजेनाव्युद्युक्तुऽनवालेयेकुशांघरीअस्मे
 प्रजागरासर्वपरीसुखिवेन्द्रो॥ वरामायधीनुहापास्त्रनद्वरराहतो॥ परेहुदयीअमुव्युवेष्याववीस-
 तो॥ स्त्रियुहाहेलकर्त्तमानतो॥ हृषुनलुहुवर्णेवरप्राथनानायकारकापती॥ कराया १
 ३५॥ अंगेकारणेवेनांतेअमुव्यीस्पृष्टेसंगतो मान्यवीतुहुअसेमानतो॥ पदराणेलालुमन्त्र-
 युचमाप्युभासालियजरीसुलभमवरावेनत्यासलरी॥ वरामाउरालियत्युभराणतेसमादि-
 याधी॥ वरेवकन्यकाराणिसत्तुमव्यवती॥ तुहुअप्पसोयरेकराकीसोयरीकानेश्विती॥
 ४ पदरामापृथक्पदेहुपतीनेनवृनीपनानारायणतुष्टेसमेत्तुहुउनबोल्ले�॥ मान्यअसे
 संव्युपलाहुदेष्यद्यन्तमुक्तेनेमान्यवासर्वसमाद्वलसे॥ वरामासनमानेकुलाङ्गाअमिन
 हृष्टेवृनी॥ लेसेववस्त्रं अभूषणादेप्रेमुनी॥ छहुवेनयेबोक्तिअमितहृष्टेवृनी॥ मुरा-
 रिहीलदनंतरअपुत्त्यकुलासप्तवारिती॥ कराया १३७॥ पाठवावयगदेहुदेतसेव्युभवयाव-
 करेहुलुहुनीयापुत्रात्तुव्यवरी॥

॥ पुरुषे विनीद्वारा देखी आकृति जहां हृष्ण वरो योविलक्षित करिल हृस्ति न। पुरी ॥ प्रमुख देख

द्वारा जलवासन माला बोने वाला ॥ द्वे हृस्ति न थे तृपती सन ने भी पहला प्रकृति देख-

न्मान सूलं पुनर्मान भी हृष्ण द्वयोर्धन हृष्ण द्वारा सच्च द्वया प्रोक्ति न समान ली ॥ करण ॥

॥ १३४ ॥ वक्षा मृष्ण द्वय न हृष्ण द्वया मोजना दृष्टि वर्तुनी वोक्ति वीक्षा परि समान नी ॥ द्वल देव उजव
द्वारा वले ॥ प्रेरणे उभी हृष्ण देवी वीर्ति सर्व अंतरी ॥ वले उभी मोजने वले वर्कु कर्मा माल-

से ॥ मोहृष्ण द्वय में द्वय में द्वय वले से ॥ लैरथ्य परिमात्रा वहृष्ण देव मोजने से ॥ पुरुष्ण देख-

जय अनुलत वले ॥ आमिल मोजने प्राप्ति नी ॥ करण ॥ १३५ ॥ द्वा परि भव्य जिनें द्वय करें वल-

ना हृष्ण द्वय नी अहृष्ण द्वय द्वय द्वय नी ॥ पुरुष्ण उपाजिन सौरव्य प्राप्ति यज्ञ मानव न-

व करी अध्यात्मा नीट अवधारी ॥ वले परक वले वले जिवा अव्यय द्वय मिहा वली ॥ भोग-

द्वा अहृष्ण द्वय देवी समती ॥ करि पुरुष्ण उपाजिन द्वय वले वले ॥ भुवन भायी दी

अव्यय द्वय देवी समती ॥ करण ॥ १३६ ॥ जव ग्राम चारा कमाण द्वारा वृग्य क्षमता विने

जाइ द्वय अपमाना करणे ॥ करि वेक्षा द्वय देवी रवाले सदु-रवाली कृष्ण तापाहृष्ण नीमी

द्वय नीमी ॥ मुख वला द्वय नीकृष्ण वारा जेतकरी ॥ द्वय देवी रवान पाल विजक वतन सेलव भरी ॥ करण

इपनय डला नीमी संकावरी ॥ वंद द्वय नी वले वेपुष्ण ही कंटक समवेली ॥ करण ॥ १३७ ॥

येवे दीने पुकुड़ता मंच को बीवर कर दिया तरी अवान के सुनव युक्ति गोजेरी। दुर्घटना
 नुपतिवास लोयरिके दुलरोयानी करी पुछुनिया। चालना माजपथ पुम हाईकरास
 गमतस।। प्रत्यात कर्किमणी प्रसव करिए वी असे। अनुसाने असे मम निर्विवरण छटकोनसे।। दुर्घट-
 कोने मम सवलीं।। कुः रवे होय नो दिवी॥ कराया १४२।। पुष्ट हाय य कर्कुति हालिमुसारिसा-
 इहोने करो वन वहाय धिक उषा॥ यास्तव प्रत्यारा ने दुली।। हिल गुजबुक करिते मनो तिक
 उत्प्रभाव कथले से॥ चालना वहल सेले येल त्वरित कर्किमणी धरी॥ जावा ने दुर्घटने द्य को-
 यी करी॥ धरिल शक हुन कराय जाह त्य वरी॥ राकुनि गुज दुली ने धुन जाल से कर्किमणी महाल
 प्रवीप कराया १४३॥ मदगती ने हुदि मध्य प्यासा न सानेरा कर्किमणी कर्कुरी जाह दुली धुले न राका
 उरी॥ दुर्घटन पाहता बुधि न याने न मस्का।। कर्कुरी लेल सुनिया समिष्ट लिङ वहल से॥ चालना माप-
 ने मज॥ चालना गुजव कध॥ १४४॥ सांगो ने हिल गुजा बहु धरि समजा॥ विल॥ सांग अनुहास मृदा-
 किल मन जाहुनो।। दरन ऐ वान्वन चालन तरी सांगो ने मगरि ना द्यवी॥ कराया १४४॥
 मीलियरा दुले वन नालो।। कुनि याह।। कर्किमणी वहाया साक गुनह।। संगुनी॥ वन्वन रोकता
 मिथ सुवन्वनि रोकता।। दुले वहल से दुले मन ल हुनी॥ चालने जरी प्रथा मवुम हाला पुम

जान्मुक्तो दूरी ॥ त्रिलघु यम-वारिवाहृत्या चांते वरी ॥ मृगलसीरे व्यक्ति साक्षुणि या सलवरी

॥ देवन आपुन वेळ क्षिप्त न व्यक्ति वन सरयु ने विवेती ॥ कृष्ण १४५ पंजीर पथमनि

मुण्डुभजा हृष्ट द्वाव वुरी कामुनी न करिवा विल-~~विल~~ व्यास अल्पुनी ॥ लग्न कारणी

पाया रवाडी लेव के सद्गुनी नव विल वरावे लमुलियामुनी ॥ ज्ञान १४६ व्यक्ति रुक्मिणि स-
बल दुविस वहल से ॥ मृग वीड़िल वाहृणी व्या आइमज मान्यसे ॥ हेवन एकता दुविलमु-

नीजातसे ॥ मामेठो साद्यो हुकी कल संगत से व्युष्यिती ॥ करा यम्पद्मृष्टि १४७ पंतरभामा

रुक्मिणि स्वपनी आभिमानाधारनी स्वदा से स वहति व्युत्त व्युष्यनी ॥ राज सम पाठ्ये
लायानापना संगयास्त्वा मुरारी हुकी स्वदा यम्प्रती ॥ वाल ॥ प्रापनि दय से द्रुयने ॥
नलयाना वरी ॥ संगती याल ॥ हुष्टीनिय अंतरी ॥ हुको ने सभाजन नवल सवही क-
री ॥ वृक्ष वर्ष मधु सूदन एकुनया अप्यव्यप्ति प्रात्यती ॥ ज्ञान १४८ पंये केदी ने

रुक्मिणि आनंदे के मल द्वाये वरी झापली आठवाँ ने मी हरी ॥ नीड़ि पाप्यविमी

झुमर वरना मालूम जागृत इ ॥ अच्यवरी नमाये हृष्टीजे व्यु अंतरी ॥ वाल पंजीमध्यम

रुक्मिणे नभि विमान नवल सुनेया ॥ श्रमल से स वहल हो व्योनी या मृगराज

रोता वन कवाणि दुर्जय व्यु नीय ॥ लिम्प्य स्वेतपान वारुणी वावे उदय ये द्वाल

॥ कृष्ण १४९ ॥